www.ghoonghatkibagawat.com ghoonghatkibagawat37@gmail.com ghoonghatkibagawat.com

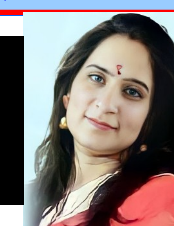
UP/HIN/1999/1282

घूँघट की बगावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी (साप्ताहिक समाचार पत्र)

वर्ष : 23 | अंक : 03 | गोरखपुर | 16 जुलाई 2023 | पृष्ठ : 8 | मूल्य: 2/–

महिलाएँ: समाज की वास्तविक वास्तुकार



हमारा समाज कहता है, पृथ्वी पर सबसे मूल्यवान वस्तु 'स्त्रियाँ' हैं। आइए इस धरती पर हर महिला को सलाम करें। 'महिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार हैं, वे जो चाहें वह बना सकती हैं।' "एक महिला क्या चाहती है"? समय, देखभाल और बिना शर्त प्यार, आदि। इस धरती पर प्रत्येक महिला गरिमा, संस्कृति और सम्मान का प्रतीक है। नारी के बिना यह संसार सूना और अंधा है। महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निजी जीवन में महिला की भागीदारी काफी प्रभावशाली है। कई समाज घरों और समुदायों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज करते हैं। महिलाओं के अवैतनिक श्रम को अक्सर न तो महत्व दिया जाता है और न ही जीडीपी में शामिल किया जाता है, जो अक्सर अनदेखा और गैर–मान्यता प्राप्त रहता है। अब यह पहचानने का समय आ गया है कि उनकी भूमिका और योगदान कितने महत्वपूर्ण हैं। आइए सुनिश्चित करें कि दोनों लिंग एक–दूसरे को भागीदार के रूप में देखें।

"महिलाएं" एक सशक्त शब्द है. यह आकर्षक है क्योंकि यह प्यार, देखभाल, पोषण, दायित्वों, जिम्मेदारियों, शक्ति, अनंत काल, मातृत्व आदि को दर्शाता है। नारी समाज का दर्पण है। जब उसे हाशिये पर धकेल दिया जाता है, तो उस पर अत्याचार किया जाता है; यदि इसे पाला जाता है, तो समाज को पाला जाता है; यदि इसे मजबूत किया जाता है, तो यह सशक्त होता है। वह संस्कृति और रीति–रिवाजों को बनाए रखती है और उन्हें सामने लाती है। वह वह है जो अपने पति और उसके परिवार की परवाह करती है। दूसरे शब्दों में, वह समाज में सब कुछ बनाती है। एक महिला (माँ) उसकी संतान होती है, पहली शिक्षक; वह अपने बच्चों का प्यार से इलाज करने वाली पहली डॉक्टर हैं। वह अपने बच्चों को पढ़ाने वाली पहली शिक्षिका हैं, अपने बच्चों के साथ खेल खेलने वाली पहली साथी हैं। अपने बच्चे के विकास में उसका कार्य बहुत बड़ा है।

हमारे समाज में कई सालों से महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता रहा है। इस प्रकार की हीनता के कारण उन्हें अपने जीवन में विभिन्न मुद्दों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खुद को पुरुषों के बराबर साबित करने के लिए उन्हें पुरुषों से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। मध्य युग में लोग महिलाओं को विनाश की कुंजी मानते थे, इसलिए उन्होंने कभी भी महिलाओं को पुरुषों की तरह बाहर जाने और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी। फिर भी आधुनिक युग में महिलाओं को अपने दैनिक जीवन में कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अपना करियर स्थापित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। कई माता–पिता केवल लड़का पैदा करना पसंद करते हैं और केवल लड़कों को ही शिक्षा देने की अनुमति देते हैं। उनके लिए महिलाएं परिवार को खुश और स्वस्थ रखने का माध्यम मात्र हैं।

एक महिला को समाज में अधिक उपहास की दृष्टि से देखा जाता है और यदि वह प्रेम विवाह या अंतरजातीय प्रेम विवाह में शामिल होती है तो उसे ऑनर किलिंग का खतरा अधिक होता है। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में स्वायत्तता, घर से बाहर गतिशीलता, सामाजिक स्वतंत्रता आदि तक समान पहुंच नहीं है। महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली कुछ समस्याएं उनकी घरेलू जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक और सामाजिक निर्दिष्ट भूमिकाओं के कारण हैं।

भारत सरकार ने लैंगिक समानता और सभी महिलाओं और लड़कियों की आर्थिक स्वतंत्रता को आगे बढ़ाने के लिए हाल के वर्षों में कई नई नीतियां और सुधार लागू किए हैं। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए, कुछ प्रमुख पहलों में 22 करोड़ महिलाओं के लिए जन धन खाते बनाना और उन्हें मुद्रा योजना के तहत कम ब्याज पर ऋण प्रदान करना शामिल है। बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ पहल शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।

जनसंख्या की आवश्यकताओं के प्रति जिम्मेदार और उत्तरदायी निष्पक्ष, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच प्राप्त करने का लक्ष्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का प्राथमिक फोकस है। महिलाओं को सशस्त्र सेवाओं में स्थायी कमीशन प्रदान करना और मातृत्व अवकाश की अवधि 12 से बढ़ाकर 26 सप्ताह करना सामाजिक और आर्थिक सश. क्तिकरण के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देता है और एक सक्षम वा. तावरण स्थापित करता है। बलात्कार को रोकने के लिए बनाए गए कानूनों को भी और अधिक सख्त बनाया जा रहा है। इसके अलावा, उज्ज्वला कार्यक्रम, स्वाधार गृह कार्यक्रम और महिला शक्ति केंद्र उन मुद्दों से निपटने के लिए केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों और कार्यक्रमों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिनका महिलाओं को आम तौर पर सामना करना पड़ता है। ये उन नीतियों और कार्यक्रमों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिन्हें लागू किया गया है। देश में महिलाओं के व्यापक सशक्तिकरण की गारंटी के लिए, सरकार, व्यापारिक समुदाय, गैर–लाभकारी संस्था और आम जनता सभी को मिलकर काम करना चाहिए। जन आंदोलन और जन भागीदारी के माध्यम से सामूहिक व्यवहार परिवर्तन भी आवश्यक है। हमारा समाज कहता है, पृथ्वी पर सबसे मूल्यवान वस्तु 'स्त्रियाँ' हैं। आइए इस धरती पर हर महिला को सलाम करें। 'महिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार हैं, वे जो चाहें वह बना सकती हैं।' "एक महिला क्या चाहती है"? – समय, देखभाल और बिना शर्त प्यार, आदि। इस धरती पर प्रत्येक महिला गरिमा, संस्कृति और सम्मान का प्रतीक है। नारी के बिना यह संसार सूना और अंधा है। महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निजी जीवन में महिला की भागीदारी काफी प्रभावशाली है। कई समाज घरों और समुदायों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज करते हैं। महिलाओं के अवैतनिक श्रम को अक्सर न तो महत्व दिया जाता है और न ही जीडीपी में शामिल किया जाता है, जो अक्सर अनदेखा और गैर–मान्यता प्राप्त रहता है। अब यह पहचानने का समय आ गया है कि उनकी भूमिका और योगदान कितने महत्वपूर्ण हैं। आइए सुनिश्चित करें कि दोनों लिंग एक–दूसरे को भागीदार के रूप में देखें।

–प्रियंका सौरभ

चंद्रयान की सफलता के साथ–साथ खुशियां बढ़ती गईं

चंद्रयान–3 के साथ विशाल रॉकेट जोरदार गर्जना के साथ जब शुक्रवार दोपहर आसमान में उड़ा तो वहां सिर्फ विस्मय और तालियां नहीं थीं, बल्कि कुछ हल्के–फुल्के क्षण भी थे।

सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के मिशन नियंत्रण केंद्र के मंच और उसके आसपास मौजूद लोग थोड़ी देर के बाद ही खुशी से झूम उठे। इसी मंच से इसरो की कुछ यादगार और प्रसिद्ध उपलब्धियों की घोषणा की गई है।

चंद्रयान–3 के एलएमवीएम3–एम4रॉकेट से सफलतापूर्वक अलग होने के तुरंत बाद, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस. सोमनाथ मंच पर आए और कहा, 'बधाई हो भारत।' इसरो अध्यक्ष के पीछे अंतरिक्ष विभाग और परमाणु ऊर्जा विभाग के राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह, कई सरकारी प्रतिनिधि, दौरे पर आए प्रतिनिधिमंडल और कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी बैठे थे। सोमनाथ ने आगे कहा, "चंद्रयान–3 ने चंद्रमा की ओर अपनी यात्रा शुरू कर दी है।"

उन्होंने अपने संक्षिप्त संबोधन में कहा, "एलवीएम3 ने चंद्रयान–3 को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया है... आइए हम आने वाले दिनों में चंद्रयान–3 को अपनी आगे की कक्षा में प्रवेश करने और चंद्रमा की ओर यात्रा करने के लिए शुभकामनाएं दें।" इसके बाद उन्होंने चंद्रयान–3 टीम के मिशन निदेशक एस मोहन कुमार और परियोजना निदेशक पी वीरमुथुवेल का परिचय कराया। सोमनाथ ने मोहन कुमार को माइक्रोफ़ोन पर आमंत्रित किया, जबकि वह अपनी घड़ी देख रहे थे, जो समय की कमी का स्पष्ट संकेत था। जैसे ही कुमार ने अपना संबोधन शुरू किया, इसरो प्रमुख ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कुमार के करीब आकर कुछ किया।

कुमार ने अपने संबोधन की शुरुआत की, "मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि एलवीएम3–एम4 ने चंद्रयान –3 को सटीक कक्षा में स्थापित कर दिया है... और एक बार फिर यह रॉकेट इसरो का सबसे विश्वसनीय भारी लिफ्ट वाहन साबित हुआ है। जब कुमार ने प्रक्षेपण यान के बारे में बात शुरू की तो वहां हास्य का माहौल उत्पन्न हो गया। उन्होंने कहा, "विकास इंजन...अधिकतर यह मानव रेटेड इंजन बनने के लिए 100 प्रतिशत योग्य है...पिछली गैस प्रविष्टि भी हटा दी गई और यह एक आदर्श है।





नेहरू के सपने अधूरे मोदी कर रहे पूरे?



चंद्रमा एक ऐसा खास आकर्षण जिसने सदियों से हमारे मन और कल्पनाओं पर अधिकार जमाया हुआ है। हमारे अतीत की कुंजी और भविष्य की ओर ले जाने वाला मार्ग। हम सब के बचपन में चांद से जुड़ी लोरियों और कहानियों की एक अलग जगह बनी हुई है। चांद हमेशा से हमारे लिए किसी रहस्य से कम नहीं है। चांद को मुट्ठी में करने सपनों की उड़ान पर हिन्दुस्तान निकल पड़ा है। 14 जुलाई 2023 की तारीख देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन साबित हुआ। दोपहर के 2:30 मिनट पर भारत का चंद्रयान–3 चांद की ओर रवाना हो गया। चांद को छूना औरों की तरह हमारा भी सपना रहा है। चंद्रयान–3 पृथ्वी कक्षा में स्थापित हो गया। 40 दिन बाद पहले पृथ्वी और फिर चंद्रमा की कक्षा में चक्कर लगाएगा। उसके बाद चांद पर उतरेगा।

अभी पृथ्वी पर भी एक नया चक्कर चल रहा है। चंद्रयान–3 के रवाना होते ही उसे लेकर क्रेडिट की लड़ाई भी शुरू हो गई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने ट्वीट में इसका पूरा श्रेय वैज्ञानिकों को दिया। वहीं बीजेपी के कुछ नेताओं ने वैज्ञानिकों के साथ प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को भी इसका श्रेय दिया। इसके बाद कांग्रेस नेताओं की ओर से भी ताबड़तोड़ बयान आए। राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा, जयराम रमेश जैसे कई नेताओं ने जो ट्वीट किए उसमें लिखने का भावार्थ यही था कि इसरो की शुरुआत तो नेहरू जी ने ही की थी। उन्होंने ही तो अंतरक्षि को लेकर सपने जगाए थे वरना ये सब कैसे होता?

कांग्रेस ने पूर्व प्रधानमंत्रियों के योगदान को किया याद

कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने भी एक ट्वीट किया और उन्होंने नेहरू जी से लेकर अटल जी तक को क्रेडिट दिया। लेकिन मनमोहन सिंह के बाद वो मोदी का नाम लिखना भूल गए या फिर उन्होंने जान बूझकर नहीं लिखा। ये तो वही बता सकते हैं। इसके बाद ही देखते–देखते नेहरू जी और इंदिरा गांधी की कुछ पुरानी तस्वीरें अवतरित हुईं। इसरो की साइकिल पर रॉकेट ले जाती तस्वीरें वायरल होने लगी। कांग्रेस ने एक नैरेटिव गढ़ा तो वहीं काउंटर में ये दलील दी जाने लगी कि मोदी न होते तो आज भी साइकिल पर ही रॉकेट ले जा रहे होते। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने चंद्रयान–3 के सफल प्रक्षेपण को सभी भारतीयों के लिए बेहद गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि यह पंडित जवाहर लाल नेहरू, अटल बिहारी वा. जपेयी से लेकर मनमोहन सिंह सहित पिछले सभी प्रधानमंत्रियों की दूरदर्शिता और दृढ़ संकल्प की उप. लब्धियों का प्रमाण है। बेशक इसमें इसरो और हमारे अनगिनत वैज्ञानिकों का महान योगदान है जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश में वैज्ञानिक सोच के लिए समर्पित कर दिया। रोचक तथ्य यह है कि इसमें मोदी सरकार के नौ साल के कार्यकाल का कोई जिक्र नहीं किया गया।

नेहरू और इसरो की स्थापना

डॉक्टर विक्रम साराभाई और डॉक्टर रामानाथन ने 16 फरवरी 1962 को Indian National Committee for Space Research की स्थापना की गई। जो आगे चलकर 15 अगस्त 1969 को इसरो बन गया। बहुत सारे लोगों ने यह सवाल उठाया है कि जब इसरो की स्थापना से पहले ही नेहरू का देहांत हो गया था, तो वो इस संस्थान की स्थापना कैसे कर सकते हैं? इसरो की आधिकारिक वेबसाइट पर भी अंतरिक्ष रिसर्च एजेंसी की स्थापना में नेहरू और डॉक्टर साराभाई के योगदान का जिक्र है। वेबसाइट पर लिखा है कि भारत ने अंतरिक्ष में जाने का फैसला तब किया था जब भारत सरकार ने साल 1962 में इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च की स्थापना की थी।

मोदी सरकार में क्या बदला है?

नेतृत्व की नीति और इच्छाशक्ति को भी देखना जरूरी है। 2014 तक साइंस एंड टेक्नोलॉजी का बजट 5 हजार 400 करोड़ रुपए थे। भारत के विज्ञान को हम इससे किस दिशा में ले जा सकते हैं। कहा तो ये भी जाता है कि सारे पैसे वेतन और लैबोरेट्री के मेंटेनेंस में ही चले जाते थे। लेकिन 2022 में 14 हजार 217 करोड़ हो गया है। यानी 2014 से लेकर 2022 तक इसके बजट में तीन गुणा इजाफा हुआ है। इसके अलावा पीएम मोदी की सरकार में साइंस टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन पॉलिसी को लाकर एक नई क्रांति को जन्म दिया। अगले पांच साल में भारत अमेरिका और रूस से हर क्षेत्र में आगे बढ़ने वाला है। वही वैज्ञानिक स्टालिन और जार के युग में थे। वहीं वैज्ञानिक वाशिंगटन और लिंकन के युग में भी थे। दोनों का काम अलग अलग था।

14 जुलाई 2023 की तारीख देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन साबित हुआ। दोपहर के 2:30 मिनट पर भारत का चंद्रयान–3 चांद की ओर रवाना हो गया। चांद को छूना औरों की तरह हमारा भी सपना रहा है।



उड़ान भरने के लगभग 16 मिनट बाद प्रणोदन मॉड्यूल रॉकेट से सफलतापूर्वक अलग हो गया और यह चंद्र कक्षा की ओर बढ़ते हुए पृथ्वी से 170 किमी निकटतम और 36,500 किमी सुदूरतम बिंदु पर एक अण्डाकार चक्र में लगभग पांच–छह बार पृथ्वी की परिक्रमा करेगा।

चंद्रयान–3 के सफल प्रक्षेपण से भारत ने रच दिया नया इतिहास

आप सभी ने बचपन में चंदा मामा दूर के वाली कविता सुनी होगी लेकिन अब चंदा मामा दूर नहीं पास आने वाले हैं क्योंकि भारत ने आज जो इतिहास रचा है उसको देखकर दुनिया दांतों तले उंगली दबाए हुए है। भारत ने एलवीएम3–एम4 रॉकेट के जरिए अपने तीसरे चंद्र मिशन–'चंद्रयान–3' का जो सफल प्रक्षेपण किया वह यह भी दर्शाता है कि हम गलतियों से सबक लेने वाले और लक्ष्य के लिए कभी प्रयास नहीं छोड़ने वाले लोग हैं। पंद्रह साल में यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का यह तीसरा चंद्र मिशन था।

पूरी दुनिया की नजरें इस बात पर लगी थीं कि भारत सफल होता है या नहीं। हर भारतीय की धड़कन भी जैसे–जैसे लान्च का समय करीब आ रहा था वैसे–वैसे तेज होती जा रही थी।

देशभर में हवन पूजन और प्रार्थनाएं हो रही थीं कि हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत और देश की आकांक्षा सफल हो जाये और आखिरकार हमारे बाहुबली चंद्रयान–3 ने सफलता का स्वाद चखा। चंद्रयान के सफल प्रक्षेपण के बाद देश में खुशी की लहर है और एक दूसरे को बधाइयों का दौर चल रहा है।

आज के अभियान के बाद अब चंद्र सतह पर एक बार फिर 'सॉफ्ट लैंडिंग' का प्रयास किया जाएगा। इसमें सफलता मिलते ही भारत ऐसी उपलब्धि हासिल कर चुके अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ और चीन जैसे देशों के क्लब में शामिल हो जाएगा।

चंद्रयान–3 के सफल प्रक्षेपण के बाद इसरो अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कहा कि चंद्रयान–3 की 'सॉफ्ट लैंडिंग' 23 अगस्त को शाम पांच बजकर 47 मिनट पर किए जाने की योजना है। हम आपको बता दें कि गुरुवार को शुरू हुई 25.30 घंटे की उलटी गिनती के अंत में एलवीएम3–एम4 रॉकेट श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष प्रक्षेपण केंद्र के दूसरे 'लॉन्च पैड' से आज अपराह्न 2.35 बजे निर्धारित समय पर धुएं का घना गुबार छोड़ते हुए शानदार ढंग से आकाश की ओर रवाना हुआ।

श्रीहरिकोटा का दृश्य

इसरो के अधिकारियों के अनुसार, उड़ान भरने के लगभग 16 मिनट बाद प्रणोदन मॉड्यूल रॉकेट से सफलतापूर्वक अलग हो गया और यह चंद्र कक्षा की ओर बढ़ते हुए पृथ्वी से 170 किमी निकटतम और 36,500 किमी सुदूरतम बिंदु पर एक अण्डाकार चक्र में लगभग पांच–छह बार पृथ्वी की परिक्रमा करेगा। एलवीएम3–एम4 रॉकेट अपनी श्रेणी में सबसे बड़ा और भारी है जिसे वैज्ञानिक 'फैट बॉय' या 'बाहुबली' कहते हैं। प्रक्षपेण देखने के लिए मौजूद हजारों दर्शक चंद्रयान–3 के रवाना होते ही खुशी से झूम उठे और सफल प्रक्षेपण के बाद वैज्ञानिकों ने तालियां बजाईं। लैंडर के साथ प्रणोदन मॉड्यूल, गति प्राप्त करने के बाद चंद्रमा की कक्षा तक पहुंचने के लिए एक महीने से अधिक लंबी यात्रा पर तब तक आगे बढ़ेगा जब तक कि यह चंद्र सतह से 100 किमी ऊपर नहीं पहुंच जाता। इसरो के वैज्ञानिकों ने कहा कि वांछित ऊंचाई पर पहुंचने के बाद लैंडर मॉड्यूल चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर 'सॉफ्ट लैंडिंग' के लिए उतरना शुरू कर देगा। आज रवाना हुआ 'चंद्र मिशन' 2019 के 'चंद्रयान–2' का अनुवर्ती मिशन है। भारत के इस तीसरे चंद्र मिशन में भी अंतरिक्ष वैज्ञानिकों का लक्ष्य चंद्रमा की सतह पर लैंडर की 'सॉफ्ट लैंडिंग' का है। 'सॉफ्ट लैंडिंग' इस अभियान का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा होगी।

हम आपको याद दिला दें कि 'चंद्रयान–2' मिशन के दौरान अंतिम क्षणों में लैंडर 'विक्रम' पथ विचलन के चलते 'सॉफ्ट लैंडिंग' करने में सफल नहीं हुआ था। यदि इस बार इस मिशन में सफलता मिलती है तो भारत ऐसी उपलब्धि हासिल कर चुके अमेरिका, चीन और पूर्व सोवियत संघ जैसे देशों के क्लब में शामिल हो जाएगा।

इसरो अधिकारियों के बयान

बहरहाल, चंद्रयान–3 के सफल प्रक्षेपण के बाद इसरो अध्यक्ष एस सोमनाथ ने मिशन नियंत्रण कक्ष (एमसीसी) से कहा कि रॉकेट ने चंद्रयान–3 को सटीक कक्षा में स्थापित कर दिया है। उन्होंने कहा, "बधाई हो, भारत। चंद्रयान–3 ने चंद्रमा की ओर अपनी यात्रा शुरू कर दी है। हमारे प्रिय एलवीएम–3 ने पहले ही चंद्रयान–3 को पृथ्वी के चारों ओर सटीक कक्षा में स्थापित कर दिया है... और आइए हम चंद्रयान–3 को आगे की कक्षा में बढ़ाने की प्रक्रिया तथा आने वाले दिनों में चंद्रमा की ओर इसकी यात्रा के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करें।" सोमनाथ ने कहा कि चंद्रयान–3 की 'सॉफ्ट लैंडिंग' 23 अगस्त को शाम पांच बजकर 47 मिनट पर किए जाने की योजना है।

उधर, मिशन निदेशक एस मोहन कुमार ने कहा कि एलवीएम3 रॉकेट एक बार फिर इसरो का सबसे विश्वसनीय भारी प्रक्षेपण वाहन साबित हुआ है। उन्होंने कहा, "हम राष्ट्रीय आवश्यकताओं के साथ–साथ उपग्रह मांगों को ध्यान में रखते हुए इस वाहन की प्रक्षेपण आवृत्ति बढ़ाने की प्रक्रिया में हैं।"

परियोजना निदेशक पी वीरमुथुवेल ने कहा कि प्रणोदन मॉड्यूल और लैंडर मॉड्यूल में बिजली उत्पादन सहित अंतरिक्ष यान के सभी मानक सामान्य हैं।

केंद्रीय मंत्री का बयान

दूसरी ओर, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने आज के प्रक्षेपण को भारत के लिए गौरव का क्षण करार दिया। भारत को गौरवान्वित करने के लिए इसरो टीम की सराहना करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद व्यक्त किया और कहा कि उन्होंने "श्रीहरिकोटा के द्वार खोलकर तथा भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र को सक्षम करके इसे संभव बनाया है।" उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने हाल ही में कहा था कि सफलता की कोई सीमा नहीं है और 'मुझे लगता है कि चंद्रयान ब्रह्मांड के अज्ञात क्षितिजों का पता लगाने के लिए आकाश की सीमा से आगे निकल गया है।' जितेंद्र सिंह ने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक कहे जाने वाले दिवंगत विक्रम साराभाई की सराहना करते हुए कहा कि आज का दिन उनके सपनों की पुष्टि का दिन भी है। उन्होंने कहा, ''यह दिन उस सपने का संकेत है जो विक्रम साराभाई ने छह दशक पहले देखा था। उनके पास संसाधनों की भले ही कमी रही हो, लेकिन आत्मविश्वास की कभी कमी नहीं थी।'' मंत्री ने कहा कि साराभाई और उनकी टीम को खुद पर, भारत की क्षमता और इसकी कुशलता पर भरोसा था। जितेंद्र सिंह और कई पूर्व इसरो प्रमुख इस प्रक्षेपण को देखने के लिए उपस्थित थे।

कुछ पुरानी बातें

स्मरणीय है कि इससे पहले चंद्रयान–1 को 2008 और चंद्रयान–2 मिशन को 2019 में अंजाम दिया गया था। पिछली बार की तरह इस बार भी चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र को अन्वेषण के लिए चुना गया है क्योंकि चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव उत्तरी ध्रुव की तुलना में बहुत बड़ा है। इसके आस–पास स्थायी रूप से छाया वाले क्षेत्रों में पानी की मौजूदगी की संभावना हो सकती है। चंद्रयान–3 मिशन में एक स्वदेशी प्रणोदन मॉड्यूल, लैंडर मॉड्यूल और एक रोवर शामिल है जिसका उद्देश्य अंतर–ग्रहीय अभियानों के लिए आवश्यक नई प्रौद्योगिकियों को विकसित करना और प्रदर्शित करना है।

लैंडर की 'सॉफ्ट लैंडिंग' के बाद इसके भीतर से रोवर बाहर निकलेगा और चंद्र सतह पर चहलकदमी कर अपने उपकरण–एपीएक्सएस–एल्फा पार्टिकल एक्स–रे स्पेक्ट्रोमीटर की मदद से अन्वेषण कार्य को अंजाम देगा।

कांग्रेस ने लिया श्रेय

दूसरी ओर, कांग्रेस ने 'चंद्रयान–3' का प्रक्षेपण किए जाने के बाद कहा कि यह सभी देशवासियों के लिए गर्व का विषय है और वह इसरो के सभी लोगों को सलाम करती है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के आत्मनिर्भर होने का एक लंबा इतिहास रहा है और इस दौरान इसे राजनीतिक नेतृत्व का भरपूर सहयोग मिला है। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भारतीय राष्ट्रीय समिति की स्थापना फरवरी, 1962 में की गई थी। इसके लिए होमी भाभा और विक्रम साराभाई का धन्यवाद। साराभाई ने अगस्त 1969 में इसरो बनाया। यह उनका और बाद में सतीश धवन का विज़न था, जिसने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को एक विशिष्ट विकासात्मक उद्देश्य दिया।'' कांग्रेस नेता के अनुसार, ''1972 और 1984 के बीच धवन ने हर तरह से इसरो समुदाय का मार्गदर्शन किया। यूआर राव से शुरू होकर अब तक उनके प्रत्येक उत्तराधिकारी ने साराभाई–धवन की विरासत को आगे बढ़ाया है और महत्वपूर्ण योगदान दिया है।''

प्रकृति ने खेला अपना दांव



प्रकृति ने इंसान के बहुत जुल्म सहे
चीर कर उसका सीना कर दिया मजबूर
प्रतिकार पर जब उतर आई प्रकृति
तो अब दर्द होगा तो जरूर
पहाड़ों ने कहा था जीने दो शांति से
मत करो हमारी अस्मत से खिलवाड़
पैसे के पीछे पागल हो गया है आदमी
मैदान बना दिया तहस नहस किए पहाड़
प्रकृति ने ऐसा खेला अपना दांव
उजाड़ दिए कई शहर कई गांव
उखाड़ कर ले गई बड़े बड़े पेड़
जिनसे मिलती थी कभी ठंडी छांव
घर परिवार कई हो गए ज़मींदोज़
किसी ने किया सज़ा किसी को मिली
तरक्की के नाम पर बिगाड़ा जो पर्यावरण
सजा तो मिलनी थी उसी की मिली
कुदरत तो पहले भी करती थी अपना काम
पर्यावरण से नहीं करता था कोई छेड़छाड़
छलनी कर दिया जब पहाड़ों का सीना
तभी तो कुदरत दे रही सब कुछ उजाड़
झुकना पड़ेगा आदमी को टिक नहीं पायेगा
जो किया उसका परिणाम सामने आएगा
मिट जाएगा तबाह हो जाएगा वह लड़ते लड़ते
कुदरत को जो थोड़ा भी आंख दिखायेगा
उफनती नदियां गरजते पहाड़
तू कुछ नहीं सकता इनका बिगाड़
यह मंज़र और भी भयानक नज़र आएगा
सम्भल जा तेरे साथ तेरी सल्तनत को
बहा कर ले जाएगा

रवींद्र कुमार शर्मा घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

आखिर क्यों नदियां बनती हैं खलनायिकाएं?



हाल के वर्षों में नदियों के पानी से डूबने वाले क्षेत्रों में शहरी बस्तियां बसने की रफ़्तार तेज़ हो गई है. इस कारण से भी बाढ़ से होने वाली क्षति का दायरा बढ़ रहा है. क्योंकि किसी भी शहर का भौगोलिक दायरा और आबादी बढ़ने से ज़्यादा से ज़्यादा लोगो के बाढ़ के शिकार होने की आशंका बढ़ जाती है. जैसे ही बाढ़ प्रभावित इलाक़ों में बस्तियां बसने लगती हैं, तो बाढ़ के पानी के निकलने का रास्ता रुक जाता है. इससे बाढ़ का पानी निकल नहीं पाता. फिर बस्तियों को बाढ़ के पानी से बचाने के लिए उनके इर्द गिर्द बंध बनाए जाते हैं. बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बस्तियां बसने और इन बंधों के बनने से नदी घाटी और नदियों के इकोसिस्टम पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है.

नदियां हमारी सभ्यता की जड़ों का अभिन्न अंग हैं, तो उनकी वजह से आने वाली बाढ़ भी हमारे देश का हिस्सा हैं. अगर हम जलीय और मौसम विज्ञान की दृष्टि से कहें तो, भारत में बाढ़ का सीधा संबंध देश में मॉनसून के सीज़न में होने वाली बारिश से है. बाढ़ के चलते होने वाला नुक़सान लगातार बढ़ रहा है. इसकी बड़ी वजह ये है कि डूब क्षेत्र में आने वाले इलाक़ों में पिछले कुछ वर्षों के दौरान आर्थिक गतिविधियां बहुत बढ़ गई हैं. और, इंसानी बस्तियां भी बस रही हैं. इससे नदियों के डूब क्षेत्र में आने वाले लोगों के बाढ़ के शिकार होने की आशंका साल दर साल बढ़ती ही जात रही है. नतीजा ये कि नदी का कुदरती बहाव क्षेत्र बाढ़ का शिकार इलाक़ा नज़र आने लगता है. हाल के वर्षों में नदियों के पानी से डूबने वाले क्षेत्रों में शहरी बस्तियां बसने की रफ़्तार तेज़ हो गई है. इस कारण से भी बाढ़ से होने वाली क्षति का दायरा बढ़ रहा है. क्योंकि किसी भी शहर का भौगोलिक दायरा और आबादी बढ़ने से ज़्यादा से ज़्यादा लोगो के बाढ़ के शिकार होने की आशंका बढ़ जाती है. जैसे ही बाढ़ प्रभावित इलाक़ों में बस्तियां बसने लगती हैं, तो बाढ़ के पानी के निकलने का रास्ता रुक जाता है. इससे बाढ़ का पानी निकल नहीं पाता. फिर बस्तियों को बाढ़ के पानी से बचाने के लिए उनके इर्द गिर्द बंध बनाए जाते हैं. बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बस्तियां बसने और इन बंधों के बनने से नदी घाटी और नदियों के इकोसिस्टम पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है.

पहले दौर में मनुष्य शिकारी था, फिर खेती करने लगा। इसके बाद सुदूर व्यापार करने लगा और व्यापार के नाम पर सत्ता हड़पने लगा। इसके बाद औद्योगिक युग आया और सबसे बाद में, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूंजीवादी व्यवस्था उभरी। हरेक दौर में मानव पहले से अधिक विकसित होता गया और साथ ही ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग बढ़ता गया। हरेक दौर में सूचनाएं भी पिछले दौर से अधिक उपलब्ध होने लगीं। हरेक नए दौर में जनसंख्या भी पहले से अधिक बढ़ती गयी। यहां तक प्रकृति हमसे अधिक शक्तिशाली थी, पर वर्त्तमान दौर विकास की अगली सीढ़ी है, इसे मानव युग कह सकते हैं क्योंकि अब प्रकृति पर पूरा नियंत्रण मनुष्य का है और मानवीय गतिविधियां प्रकृति से अधिक सशक्त हो गयी हैं। हर डूब क्षेत्र से लोगों को हटाने और तय दिशा–निर्देशों के अनुसार उन्हें कहीं और बसाने की चुनौती बहुत बड़ी है. और इसकी शुरुआत से ही बाधाएं आने लगती हैं. आज भी ज़मीन अधिग्रहण करना एक बहुत बड़ी चुनौती है. और सरकारों पर अक्सर ये आरोप लगते रहे हैं कि वो मुआवज़ा देने में निष्पक्षता नहीं बरतते और लोगों के पुनर्वास की सरकारी योजनाएं अपर्याप्त होती हैं. इसीलिए, यथास्थिति बनाए रखने के राजनीतिक लाभ अधिक हैं. क्योंकि इसमें हर सीज़न में बाढ़ पीड़ितों को राहत और मुआवज़ा देकर काम चल जाता है. इसीलिए राज्यों की ओर से दूसरे विकल्पों पर विचार नहीं किया जाता.

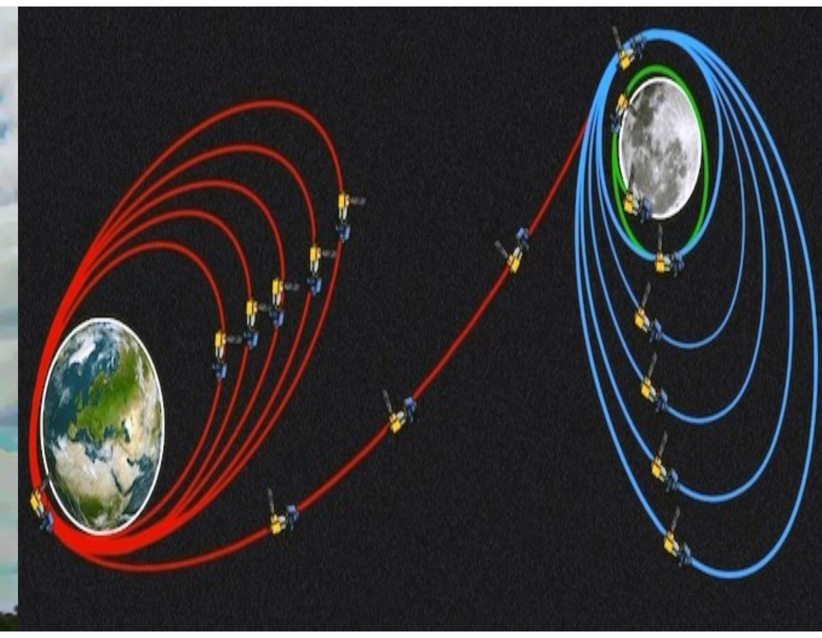
क्योंकि, इससे उनके राजनीतिक हितों पर बुरा प्रभाव पड़ता है. इसके अलावा, यहां ध्यान देने वाली बात ये भी है कि शहरी घनी बस्तियों को पूरी तरह से विस्थापित नहीं किया जा सकता. और इसके लिए इन बस्तियों के इर्द गिर्द बांध बनाकर उनकी सुरक्षा का इंतज़ाम करना भी ज़रूरी होता है. पर, इसके साथ ही साथ ये ज़रूर हो सकता है कि शहरों के बुनियादी ढांचे का और विकास रोका जाए. ताकि बाढ़ प्रभावित इलाक़ों में और बस्तियां न बसें. यहां पर एक और महत्वपूर्ण बात जो ध्यान देने योग्य है, वो ये है कि डूब क्षेत्र की ज़ोनिंग का लाभ आबादी के एक बड़े हिस्से और क्षेत्र को मिलेगा. मिसाल के तौर पर, अगर असम राज्य में डूब क्षेत्र को दोबारा संरक्षित किया जाए और ब्रह्मपुत्र नदी के प्राकृतिक बहाव के रास्ते को पुनर्जीवित किया जाए, तो इसका फ़ायदा बांग्लादेश तक को मिलेगा. क्योंकि तब बारिश होने और बाढ़ का पानी बांग्लादेश के निचले इलाक़ों तक पहुंचने के बीच काफ़ी समय मिल जाएगा. इससे नदियों में लंबे समय तक पानी का अच्छा स्तर भी बना रह सकेगा.यहां हमें ये स्वीकार करना होगा कि नदियां इस भूक्षेत्र का अभिन्न अंग हैं. ऐसे में इंसानों को अपनी गतिविधियां प्राकृतिक परिस्थितियों द्वारा तय की गई सीमाओं के दायरे में रहकर ही संचालित करनी होंगी. प्राचीन काल में जिस तरह मानवीय गतिविधियों को प्राकृतिक व्यवस्था के तालमेल से संचालित किया जाता था. उसी विचार को हमें नए सिरे से अपनाने के बारे में सोचना होगा. तभी हम इस महत्वपूर्ण नीति को ज़मीनी स्तर पर लागू कर सकेंगे, जो बरसों से धूल फांक रही है.

कुल मिलाकर हम बहुत ही खतरनाक दौर में पहुंच गए हैं और संभव है कि मानव की गतिविधियां ही इसके विनाश का कारण बन जाएं। आज के दौर में समस्या केवल प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करने की ही नहीं हैं, बल्कि हम सभी चीजों को बदलते जा रहे हैं। वायुमंडल को बदल दिया, भूमि की संरचना को बदल दिया, साधारण फसलों से जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों पर पहुंच गए, नए जानवर बनाने लगे, जीन के स्तर तक जीवन से छेड़छाड़ कर रहे हैं। अब तो कृत्रिम बुद्धि का ज़माना आ गया है। संभव है कि आने वाले समय में पृथ्वी पर सब कुछ बदल जाए, पर प्रकृति पर इनका क्या प्रभाव पड़ेगा कोई नहीं जानता।

इन चुनौतियों के उलट अगर हम नदियों के कुदरती बहाव के रास्ते तैयार करने की कोशिश करें, तो इसमें भी बाढ़ नियंत्रण की काफ़ी संभावनाएं दिखती हैं. इससे बाढ़ से होने वाली क्षति को भी कम किया जा सकेगा. जिन इलाक़ों में अक्सर बाढ़ आया करती है, वहां ज़मीन के दाम ज़्यादा नहीं होते. इसीलिए, समाज के सबसे कमज़ोर तबक़े के लोग ही ऐसे जोखिम भरे इलाक़ों में आबाद होते हैं. जो अपनी ज़िंदगी बेहद ख़तरनाक जगह पर बिताते हैं. उन्हें सरकारी योजनाओं और सेवाओं का भी लाभ नहीं मिलता. ऐसे लोगों को अगर दूसरे स्थानों पर बसाया जाए, तो उनके पास खुद को ग़रीबी के विषैले दुष्चक्र से आज़ाद करने का अवसर मिलेगा. वो हर साल आने वाली बाढ़ की तबाही से बच सकेंगे. इससे उनके सीमित पूंजीगत संसाधनों का भी संरक्षण हो सकेगा.

डॉ. सत्यवान सौरभ,





चंद्रयान–3 का सफल प्रक्षेपण, चंद्रमा पर 23 अगस्त को 'सॉफ्ट लैंडिंग' की योजना

भारत ने शुक्रवार को यहां एलवीएम3–एम4 रॉकेट के जरिए अपने तीसरे चंद्र मिशन–'चंद्रयान–3' का सफल प्रक्षेपण किया। इस अभियान के तहत यान 41 दिन की अपनी यात्रा में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर एक बार फिर 'सॉफ्ट लैंडिंग' का प्रयास करेगा जहां अभी तक कोई देश नहीं पहुंच पाया है। चंद्र सतह पर अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ और चीन 'सॉफ्ट लैंडिंग' कर चुके हैं लेकिन उनकी 'सॉफ्ट लैंडिंग' चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर नहीं हुई थी। अगर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का 600 करोड़ रुपये का चंद्रयान–3 मिशन चार साल में अंतरिक्ष एजेंसी के दूसरे प्रयास में लैंडर को उतारने में सफल हो जाता है, तो अमेरिका, चीन और पूर्व सोवियत संघ के बाद भारत चंद्र सतह पर 'सॉफ्ट–लैंडिंग' की तकनीक में महारत हासिल करने वाला चौथा देश बन जाएगा। भविष्य में मानव अन्वेषण के लिए एक संभावित स्थल के रूप में उभर रहे चंद्र क्षेत्र में मानव रहित मिशन के प्रक्षेपण के तुरंत बाद एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए इसरो अध्यक्ष एस सोमनाथ ने कहा कि एजेंसी ने 23 अगस्त को भारतीय समयानुसार शाम 5.47 बजे चंद्रमा की सतह पर तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण सॉफ्ट–लैंडिंग की योजना बनाई है।

चंद्रयान–2 तब 'सॉफ्ट लैंडिंग' में विफल हो गया था जब इसका लैंडर विक्रम सात सितंबर, 2019 को 'सॉफ्ट लैंडिंग' का प्रयास करते समय ब्रेकिंग प्रणाली में विसंगतियों के कारण चंद्रमा की सतह पर गिर पड़ा था। चंद्रयान–1 मिशन को 2008 में भेजा गया था। पंद्रह साल में इसरो का यह तीसरा चंद्र मिशन है। कल शुरू हुई 25.30 घंटे की उलटी गिनती के अंत में एलवीएम3–एम4 रॉकेट (जिसे पूर्व में जीएसएलवीएमके3 कहा जाता था) यहां स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के दूसरे 'लॉन्च पैड' से अपराह्न 2.35 बजे निर्धारित समय पर धुएं का घना गुबार छोड़ते हुए शानदार ढंग से आकाश की ओर रवाना हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मिशन के प्रक्षेपण को देश की अंतरिक्ष यात्रा में एक नया अध्याय बताया जिसने हर भारतीय के सपनों और महत्वाकांक्षाओं को बढ़ाया है। राजनीतिक नेताओं ने भी पार्टी लाइन से ऊपर उठकर इसरो की उपलब्धि की सराहना की। मिशन नियंत्रण केंद्र (एमसीसी) के अंदर वैज्ञानिक जहां सांस रोककर चंद्रयान–3 को प्रक्षेपण के लगभग 16 मिनट बाद रॉकेट से अलग होते देखने का इंतजार कर रहे थे, वहीं प्रक्षेपण यान के प्रक्षेपण के बाद हजारों दर्शक खुशी से झूम उठे। चंद्रयान–3 के सफल प्रक्षेपण के बाद इसरो अध्यक्ष एस सोमनाथ ने मिशन नियंत्रण कक्ष (एमसीसी) से कहा कि रॉकेट ने चंद्रयान–3 को कक्षा में सटीकता के साथ स्थापित कर दिया।

उन्होंने कहा, बधाई हो, भारत! चंद्रयान–3 ने चंद्रमा की ओर अपनी यात्रा शुरू कर दी है। हमारे प्रिय एलवीएम–3 ने पहले ही चंद्रयान–3 को पृथ्वी के चारों ओर सटीक कक्षा में स्थापित कर दिया है... और आइए हम चंद्रयान–3 को आगे की कक्षा में बढ़ाने की प्रक्रिया तथा आने वाले दिनों में चंद्रमा की ओर इसकी यात्रा के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करें।" यह पूछे जाने पर कि मिशन में वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए दक्षिणी ध्रुव को क्यों चुना गया है, उन्होंने कहा, हम चंद्रमा की सतह पर सभी भूभौतिकीय, रासायनिक विशेषताओं के लक्ष्य को लेकर काम कर रहे हैं। दूसरा, दक्षिणी ध्रुव का अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है। सोमनाथ ने कहा कि इसके अलावा, किसी ने भी चंद्रमा की सतह पर तापीय विशेषताओं का परीक्षण नहीं किया है जो इसरो इस मिशन में करेगा। चंद्रमा के ध्रुवीय क्षेत्र पर्यावरण और इससे उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों के कारण बहुत अलग भूभाग हैं और इसलिए अज्ञात बने हुए हैं। चंद्रमा पर पहुंचने वाले पिछले सभी अंतरिक्ष यान भूमध्यरेखीय क्षेत्र में, चंद्र भूमध्य रेखा के उत्तर या दक्षिण में कुछ डिग्री अक्षांश पर उतरे थे। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके आसपास स्थायी रूप से अंधेरे वाले क्षेत्रों में पानी की मौजूदगी की संभावना हो सकती है।

मिशन निदेशक एस मोहन कुमार ने कहा कि एलवीएम3 रॉकेट एक बार फिर इसरो का सबसे विश्वसनीय भारी प्रक्षेपण वाहन साबित हुआ है। उन्होंने कहा, हम राष्ट्रीय आवश्यकताओं के साथ–साथ उपग्रह संबंधी मांग को ध्यान में रखते हुए इस वाहन की प्रक्षेपण आवृत्ति बढ़ाने की प्रक्रिया में हैं। परियोजना निदेशक पी वीरमुथुवेल ने कहा कि प्रणोदन मॉड्यूल और लैंडर मॉड्यूल में बिजली उत्पादन सहित अंतरिक्ष यान के सभी मानक सामान्य हैं। प्रक्षेपण के समय इसरो के कई पूर्व प्रमुखों के साथ उपस्थित रहे केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने आज के प्रक्षेपण को भारत के लिए गौरव का क्षण करार दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने हाल ही में कहा था कि सफलता की कोई सीमा नहीं है और मुझे लगता है कि चंद्रयान ब्रह्मांड के अज्ञात क्षितिजों का पता लगाने के लिए आकाश की सीमा से आगे निकल गया है। चंद्रयान–3 मिशन की परियोजना लागत पर उन्होंने कहा, यह करीब 600 करोड़ रुपये थी। इसरो ने कहा कि चंद्रयान–3 में एक स्वदेशी प्रणोदन मॉड्यूल, लैंडर मॉड्यूल और एक रोवर शामिल है, जिसका उद्देश्य अंतर–ग्रहीय अभियानों के लिए आवश्यक नई तकनीकों को विकसित करना और प्रदर्शित करना है।

इसरो के अधिकारियों के अनुसार, उड़ान भरने के लगभग 16 मिनट बाद प्रणोदन मॉड्यूल रॉकेट से सफलतापूर्वक अलग हो गया और यह चंद्र कक्षा की ओर बढ़ते हुए पृथ्वी से 170 किमी निकटतम और 36, 500 किमी सुदूरतम बिंदु पर एक दीर्घवृत्ताकार चक्र में लगभग पांच–छह बार पृथ्वी की परिक्रमा करेगा। एलवीएम3–एम4 रॉकेट अपनी श्रेणी में सबसे बड़ा और भारी है जिसे वैज्ञानिक फैट बॉय या 'बाहुबली' कहते हैं। लैंडर के साथ प्रणोदन मॉड्यूल, गति प्राप्त करने के बाद चंद्रमा की कक्षा तक पहुंचने के लिए एक महीने से अधिक लंबी यात्रा पर तब तक आगे बढ़ेगा जब तक कि यह चंद्र सतह से 100 किमी ऊपर नहीं पहुंच जाता।

इसरो के वैज्ञानिकों ने कहा कि वांछित ऊंचाई पर पहुंचने के बाद लैंडर मॉड्यूल चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र पर 'सॉफ्ट लैंडिंग' के लिए उतरना शुरू कर देगा। अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार, एलवीएम3एम4 रॉकेट सफलतापूर्वक छह जटिल अभियानों को अंजाम दे चुका है। यह भारतीय और अंतरराष्ट्रीय ग्राहक उपग्रहों को ले जाने वाला सबसे बड़ा एवं भारी प्रक्षेपण यान भी है। चंद्रयान–2 मिशन (22 जुलाई, 2019) के समान जुलाई महीने के दौरान चंद्रयान–3 के प्रक्षेपण का कारण यह है कि वर्ष में इस अवधि के दौरान पृथ्वी और चंद्रमा एक–दूसरे के करीब होंगे। लैंडर की 'सॉफ्ट लैंडिंग' के बाद इसके भीतर से रोवर बाहर निकलेगा और चंद्र सतह पर घूमते हुए अपने उपकरण–एपीएक्सएस–एल्फा पार्टिकल एक्स–रे स्पेक्ट्रोमीटर की मदद से अन्वेषण कार्य को अंजाम देगा।

यह चंद्र सतह की रासायनिक संरचना और खनिज संरचना के बारे में समझ बढ़ाने संबंधी कार्य करेगा। रोवर की अभियान अवधि एक चंद्र दिवस (धरती के 14 दिन) के बराबर होगी। चंद्रयान–3 अपने साथ विभिन्न उपकरण ले गया है जो चंद्रमा की मिट्टी से संबंधित समझ बढ़ाने और चंद्र कक्षा से नीले ग्रह की तस्वीरें लेने में इसरो की मदद करेंगे। उपकरणों में 'रंभा' और 'इल्सा' भी शामिल हैं, जो 14–दिवसीय मिशन के दौरान सिलसिलेवार ढंग से 'पथ–प्रदर्शक' प्रयोगों को अंजाम देंगे। ये चंद्रमा के वायुमंडल का अध्ययन करेंगे और इसकी खनिज संरचना को समझने के लिए सतह की खुदाई करेंगे। लैंडर 'विक्रम' तब रोवर 'प्रज्ञान' की तस्वीरें लेगा जब यह कुछ उपकरणों को गिराकर चंद्रमा पर भूकंपीय गतिविधि का अध्ययन करेगा। लेजर बीम का उपयोग करके, यह प्रक्रिया के दौरान उत्सर्जित गैस का अध्ययन करने के लिए चंद्र सतह के एक टुकड़े 'रेजोलिथ' को पिघलाने की कोशिश करेगा। सोमनाथ ने पीटीआई–से कहा, हम जानते हैं कि चंद्रमा पर कोई वायुमंडल नहीं है। लेकिन यह पूरी तरह सच नहीं है क्योंकि इससे गैस निकलती हैं।

वे आयनित हो जाती हैं और सतह के बहुत करीब रहती हैं। यह दिन और रात के साथ बदलता रहता है। लैंडर के साथ लगा उपकरण 'रेडियो एनाटॉमी ऑफ मून बाउंड हाइपरसेंसिटिव आयनोस्फियर एंड एटमॉस्फियर (रंभा) चंद्र सतह के नजदीक प्लाज्मा घनत्व और समय के साथ इसके बदलाव को मापेगा। सोमनाथ ने कहा कि रोवर अध्ययन करेगा कि यह छोटा वातावरण, परमाणु वातावरण और आवेशित कण किस तरह भिन्न होते हैं। उन्होंने कहा, यह बहुत दिलचस्प है। हम यह भी पता लगाना चाहते हैं कि रेजोलिथ में विद्युत या तापीय विशेषताएं हैं या नहीं। 'इंस्ट्रूमेंट फॉर लूनर सीस्मिक एक्टिविटी' (इल्सा) लैंडिंग स्थल के आसपास भूकंपीयता को मापेगा और चंद्र परत एवं आवरण की संरचना का अध्ययन करेगा। इसरो प्रमुख ने कहा, हम एक उपकरण गिराएंगे और कंपन को मापेंगे – जिसे आप मूनक्वेक (चंद्र भूकंप) व्यवहार या आंतरिक प्रक्रियाएं कहते हैं। 'लेजर–इंड्यूस्ड ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप' (लिब्स) लैंडिंग स्थल के आसपास चंद्र मिट्टी और चट्टानों की मौलिक संरचना का पता लगाएगा, जबकि 'अल्फा पार्टिकल एक्स–रे स्पेक्ट्रोमीटर' (एपीएक्सएस) चंद्र सतह की रासायनिक संरचना और खनिज संरचना संबंधी अध्ययन करेगा।

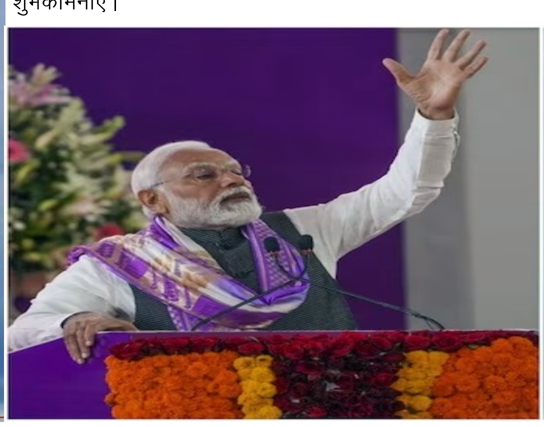
'स्पेक्ट्रो–पोलरिमेट्री ऑफ हैबिटेबल प्लैनेट अर्थ' (शेप) नामक उपकरण निकट–अवरक्त तरंगदैर्ध्य रेंज में अध्ययन करेगा, जिसका उपयोग सौर मंडल से परे जीवन की खोज में किया जा सकता है। लैंडर का चंद्र सतह पर उतरने का समय काफी मायने रखता है क्योंकि इससे उपकरणों के अध्ययन करने की अवधि का निर्णय होता है। चंद्रयान–3 अपने लैंडर को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास 70 डिग्री अक्षांश पर उतारेगा। चंद्रमा पर रात का तापमान शून्य से 232 डिग्री सेल्सियस नीचे तक गिर जाता है। सोमनाथ ने कहा, तापमान में भारी गिरावट आती है और प्रणाली के रात के उन 15 दिनों तक बरकरार रहने की संभावना को देखना होगा। यदि यह उन 15 दिनों तक बरकरार रहती है और नए दिन की सुबह होने पर बैटरी चार्ज हो जाती है, तो यह संभवतः अंतरिक्ष यान के जीवन को बढ़ा सकता है।



राष्ट्रपति की शुभकामनाएं

इस बीच, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारत के तीसरे चंद्र मिशन–'चंद्रयान–3' के सफल प्रक्षेपण पर इसरो को बधाई दी और कहा कि यह अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति के प्रति राष्ट्र की दृढ़ प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। राष्ट्रपति भवन ने राष्ट्रपति मुर्मू के हवाले से ट्वीट किया, ''भारत के तीसरे चंद्र मिशन चंद्रयान–3 का सफल प्रक्षेपण अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक और मील का पत्थर है। इसके लिए इसरो, टीम और उन सभी को शुभकामनाएं, जिन्होंने इस कार्य को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम किया।'' मुर्मू ने कहा, ''चंद्र अभियान की सफलता पर मेरी शुभकामनाएं।''





प्रधानमंत्री ने दी बधाई

उधर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चंद्रयान–3 के सफल प्रक्षेपण के बाद कहा कि यह भारत की अंतरिक्ष यात्रा में एक नया अध्याय है। उन्होंने इस उपलब्धि को वैज्ञानिकों के अथक समर्पण का प्रमाण बताया। मोदी ने यान के प्रक्षेपण के तत्काल बाद एक ट्वीट में कहा, ''चंद्रयान–3 ने भारत की अंतरिक्ष यात्रा में एक नया अध्याय लिखा है। यह हर भारतीय के सपनों और महत्वाकांक्षाओं को ऊपर उठाते हुए ऊंची उड़ान भरता है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि हमारे वैज्ञानिकों के अथक समर्पण का प्रमाण है। मैं उनकी भावना और सरलता को सलाम करता हूं!'' इससे पहले, प्रधानमंत्री मोदी ने चंद्रयान–3 के प्रक्षेपण के लिए शुभकामनाएं दीं और कहा कि भारतीय अंतरिक्ष के क्षेत्र में 14 जुलाई 2023 का दिन हमेशा स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा तथा यह राष्ट्र की आशाओं और सपनों को आगे बढ़ाएगा। उन्होंने कहा, ''जहां तक भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र का प्रश्न है, 14 जुलाई 2023 हमेशा स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगा। हमारा तीसरा चंद्र मिशन चंद्रयान–3 अपनी यात्रा का शुभारंभ करेगा। यह उल्लेखनीय मिशन हमारे देश की आशाओं और सपनों को आगे बढ़ाएगा।''

देश में जजों की भूमिका चिंताजनक ..!

जानकारी मिली है की अपनों को जज बनाने के लिए हाईकोर्ट ने बदल डाला सिलेक्शन प्रोसेस, सीजेआई की बेंच ने बताया गलत पर कोई करवाई नहीं की । संवैधानिक बेंच का कहना था कि अगर हम इन जजों को हटाते हैं तो उसके कई गलत परिणाम होंगे। इनमें सबसे अहम ये है कि न्यायपालिका को अनुभवी जजों से वंचित होना पड़ेगा।दरअसल अपने पसंदीदा वकीलों को जज बनाने के लिए केरल हाईकोर्ट ने सिलेक्शन प्रोसेस को ही बदल डाला। मामले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई। हालांकि सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की बेंच ने हाईकोर्ट के फैसले को गलत करार दिया लेकिन उन जजों के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया जो इस प्रक्रिया के तहत ही चुने गए थे ।संवैधानिक बेंच का कहना था कि अगर हम इन जजों को हटाते हैं तो उसके कई गलत परिणाम होंगे। इनमें सबसे अहम ये है कि न्यायपालिका को अनुभवी जजों से वंचित होना पड़ेगा। लिहाजा उन जजों को हटाकर दूसरों को नियुक्त करना गलत होगा । हाईकोर्ट ने 1961 के कानून से ही कर दिया खिलवाड़ तो लोगो में ट्रोल करना शुरू कर दिया । संवैधानिक बेंच में सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ के साथ जस्टिस ऋषिकेश रॉय, जस्टिस पीएस नरसिम्हा, जस्टिस पंकज मित्तल और जस्टिस मनोज मिश्रा शामिल हैं। बेंच उन 11 उम्मीदवारों की याचिका पर सुनवाई कर रही थी जो 2017 के सिलेक्शन प्रोसेस में जज बनने के दावेदार थे। इनका कहना था कि केरल हाईकोर्ट ने 1961 के नियमों के तहत बार से जज बनने की प्रक्रिया में शामिल होने वाले कैंडिडेट्स को रिटन एग्जाम के साथ वाइवा फेस करना होगा। लेकिन हाईकोर्ट के प्रशासनिक तंत्र ने ऐन वक्त पर नियम बदल डाले। इसकी सूचना भी नहीं दी गई। इसके अलावा अपने ही हाईकोर्ट या उसके अगल–बगल में पोस्टिंग चाहते थे 3 जस्टिस, ब्श्रप् के कॉलेजियम ने नहीं सुनी दरख्वास्त और उनको अन्य अन्य राज्यों में नियुक्त कर दिया! हाईकोर्ट ने इंटरव्यू के लिए अलग से एक कट ऑफ सिस्टम बना दिया। हालांकि हाईकोर्ट के एडमिनिस्ट्रेशन ने जो नियम बदला उसकी अनुमति न तो 1961 का कानून कहता है और न ही 2015 को जारी किए गए नोटिफिकेशन में इसका कोई जिक्र था। सीजेआई की बेंच ने माना कि हाईकोर्ट ने जो कुछ किया वो सरासर गलत है । ऐन वक्त पर वाइवा के नंबरों को जोड़कर सिलेक्शन प्रोसेस को फाइनल कर दिया गया। इसकी वजह से कुछ ऐसे उम्मीदवार जज नहीं बन सके जिन्होंने लिखित परीक्षा में काफी अच्छा किया था । लेकिन सीजेआई का कहना था कि 2017 में भरती हुए जजों को हटाना भी कोई समझदारी नहीं होगी और चेतावनी दी हैंअब कोई भी गलती नहीं दुबारा नहीं हो ।



पंकज कुमार मिश्रा, जौनपुर

सप्ताह का चित्र



यदि साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं तो तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी जानी चाहिए। पुलिस विभाग द्वारा विशेष रूप से साइबर ठगी के मामलों के लिए अलग से साइबर सेल एवं पुलिस थाने बनाए गए हैं, जहां केवल साइबर ठगी के मामलों के सम्बंध में ही शिकायतें दर्ज की जाती हैं।



ऑनलाइन दुनिया में तेजी से बढ़ती साइबर ठगी

आज दुनिया के अनेक देशों में आर्थिक व्यवहार ऑनलाइन किए जा रहे हैं। मोबाइल फोन एवं लेपटॉप पर इंटरनेट के माध्यम से प्रतिदिन करोड़ों की संख्या में इस तरह के आर्थिक व्यवहार किए जा रहे हैं। कई बार सामान्यजन इन व्यवहारों को करते समय सावधानी नहीं रख पाते हैं एवं साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं। अर्थात, उनके जमा खातों से भारी भरकम राशि साइबर ठगों द्वारा निकाल ली जाती है। हालांकि इंटरनेट के माध्यम से देश विदेश के नागरिक एक दूसरे से सफलतापूर्वक बहुत आसानी से जुड़ पाते हैं परंतु जरा–सी असावधानी बहुत भारी नुक्सान का कारण भी बन जाती है। साइबर ठग इसी असावधानी का फायदा उठाकर आम नागरिकों को नुक्सान पहुंचाने में सफल हो जाते हैं। साइबर ठगी में कुछ असामाजिक तत्व आम नागरिकों के मोबाइल फोन एवं इंटरनेट पर कुछ विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग कर आम नागरिकों के मोबाइल फोन एवं लेपटॉप से व्यक्ति विशेष के समस्त प्रकार के निजी डाटा, बैंक सम्बंधी जानकारी, आदि को चुरा लेते हैं और इस जानकारी का उपयोग कर साइबर ठगी को पूर्ण करते हैं।

साइबर ठगी इतनी सफाई से की जाती है कि कुछ लोगों को तो पता ही नहीं चलता कि उनके साथ साइबर ठगी हो चुकी है। यह सब साइबर ठगी के प्रति जागरूक न होने के चलता ही सम्भव हो पाता है। साइबर ठगी का शिकार अक्सर महिलाएं होती पाई जाती हैं। भारत की लगभग एक तिहाई महिलाएं किसी न किसी प्रकार की साइबर ठगी का शिकार हो चुकी हैं एवं इनमें से केवल 35 प्रतिशत महिला. ओं ने ही इस सम्बंध में शिकायत दर्ज कराई है, जबकि लगभग 47 प्रतिशत महिलाओं ने इस सम्बंध में कोई शिकायत दर्ज ही नहीं कराई है। साथ ही, लगभग 18 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी हैं जिन्हें पता ही नहीं चला है कि उनके साथ साइबर ठगी हो चुकी है। यहां भी जानकारी का अभाव अधिक नजर आता है, क्योंकि आम नागरिकों को पता ही नहीं है कि उनके साथ साइबर ठगी होने के बाद उन्हें कहां एवं किस प्रकार शिकायत दर्ज कराना है। आम नागरिकों के जागरूक नहीं रहने के चलते भारत में साइबर ठगी अपने चरम पर पहुंच चुकी है।

वैश्विक स्तर पर जारी की गई एक जानकारी के अनुसार, कैलेंडर वर्ष 2022 में साइबर ठगी के कुल 800,944 मामले दर्ज किए गए थे, इसमें लगभग 42.2 करोड़ नागरिक प्रभावित हुए थे तथा इन मामलों में 6 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि शामिल थी। ऐसा माना जाता है कि वैश्विक स्तर पर प्रतिदिन लगभग 2,328 साइबर ठगी के मामले घटित होते हैं। वर्ष 2001 से वर्ष 2021 तक पिछले 21 वर्षों के दौरान, साइबर ठगी के मामलों में कुल 2,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक्सान हुआ है। एक अन्य अनुमान के अनुसार, साइबर ठगी से साइबर ठगों को प्रति वर्ष 1.50 लाख करोड़ रुपए की कमाई होती है और प्रतिवर्ष लगभग 43 प्रतिशत साइबर ठगी के हमले छोटे व्यवसाईयों पर होते हैं।

यह सही है कि आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में, विशेष रूप से महानगरों में, आम नागरिकों का इंटरनेट के बगैर गुजारा करना बहुत मुश्किल है। परंतु यदि इंटरनेट का उपयोग सावधानी पूर्वक किया जाये तो साइबर ठगी से बहुत बड़ी हद्द तक बचा जा सकता है। इस संबंध में कुछ विशेष सावधानियों पर ध्यान देना आवश्यक होगा। जैसे मुफ्त में प्राप्त हो रही इंटरनेट (वाई फाई) की सेवा के उपयोग से बचा जाना चाहिए, क्योंकि कुछ ऐसे वाईफाई भी होते हैं जिनके माध्यम से मोबाइल फोन एवं लेपटॉप से डाटा को चुरा लिया जाता है, अतः केवल सुरक्षित इंटरनेट की सेवा का ही उपयोग किया जाना चाहिए। आम नागरिकों को चाहिए कि वे इंटरनेट का उपयोग करने के पूर्व अपनी समस्त एप्लिकेशन पर मजबूत पासवर्ड का इस्तेमाल करें एवं मोबाइल फोन तथा लेपटॉप पर उपयोग किए जाने वाले ऑपरेटिंग सिस्टम एवं इंटरनेट के सॉफ्टवेयर को नियमित रूप से समय समय पर अपडेट करते रहें, ताकि कोई भी हैकर सॉफ्टवेयर से निजी डाटा नहीं चुरा पाए। सोशल मीडिया खातों पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करने में भी सावधानी बरतनी चाहिए। विशेष रूप से व्यापारी वर्ग को तो अपनी वेबसाइट को बहुत ही सुरक्षित तरीके से चलाना चाहिए एवं समय समय पर पासवर्ड को भी बदलते रहना चाहिए।

किसी भी अनजान व्यक्ति से प्राप्त लिंक को क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि कई बार साइबर ठग इस प्रकार की लिंक भेजते हैं एवं इस लिंक को क्लिक कर खोलने से वे संबंधित मोबाइल एवं लैपटॉप की सारी जानकारी हैक कर लेते हैं और साइबर ठगी करने में सफल हो जाते हैं। इस पद्धति से की गई साइबर ठगी को फिशिंग कहा जाता है और आजकल अधिकतर इस प्रकार की कार्य प्रणाली से ही साइबर ठगी की जा रही है।

पूर्ण सावधानी रखने के बाद भी यदि साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं तो तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी जानी चाहिए। पुलिस विभाग द्वारा विशेष रूप से साइबर ठगी के मामलों के लिए अलग से साइबर सेल एवं पुलिस थाने बनाए गए हैं, जहां केवल साइबर ठगी के मामलों के सम्बंध में ही शिकायतें दर्ज की जाती हैं। साइबर ठगी से जुड़े मामलों की शिकायत के लिए विशेष हेल्पलाइन फोन क्रमांक भी जारी किया गया है। यदि साइबर ठगी आपके क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड के माध्यम से की जा रही है तो इस सम्बंध में अपने बैंक से भी तुरंत सम्पर्क करना चाहिए तथा अपना क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड ब्लाक करवाने की कार्यवाही करनी चाहिए ताकि क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड के माध्यम से की जा रही साइबर ठगी को रोका जा सके। साथ ही अपने बैंक खाते को भी फ्रीज कराया जा सकता है। केंद्र सरकार ने साइबर ठगी की जानकारी साझा करने के उद्देश्य से एक अलग पोर्टल ॅ बलइमतबतपउम.हवअ.पद भी बनाया है। इस पोर्टल पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज की जा सकती है। साइबर ठगी से जुड़े अधिकतर मामलों में सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 के अंतर्गत कार्यवाही की जाती है। इस कानून के अनुसार, साइबर ठग द्वारा की गई ठगी की श्रेणी तय की जाती है और उसके अनुसार आरोपी ठग के खिलाफ कार्यवाही की जाती है। कई मामलों में ठग के विरुद्ध धारा 43, 65, 66 और 67 के तहत केस चलते हैं। साथ ही, आईपीसी की धारा 420, 120बी और 406 के तहत भी अपराधी ठग पर मामला दर्ज किया जाता है।

साइबर ठगी के मामलों में यदि तुरंत पुलिस की सहायता ली जाये तो कई मामलों में साइबर ठगों द्वारा लूटी गई राशि की वसूली सम्भव हो जाती है। जैसे पटना के एक व्यक्ति को साइबर ठगों ने एक पोस्ट लाइक करने के नाम पर ठग लिया था। उस व्यक्ति को साइबर ठगों ने झांसा दिया कि पोस्ट लाइक करने पर कुछ राशि का भुगतान किया जाएगा और कुछ राशि का भुगतान किया भी, इस प्रकार साइबर ठगों ने उस व्यक्ति के बैंक खाते का पता कर लिया कि उसमें कितनी राशि जमा है और साइबर ठगी करते हुए उन्होंने 9.63 लाख रुपए से अधिक की राशि उस व्यक्ति के बैंक खाते से निकाल ली। पुलिस ने हेल्पलाइन क्रमांक 1930 पर जानकारी प्राप्त होते ही साइबर ठगों के खातों पर रोक लगाने में सफलता अर्जित कर ली और इस प्रकार साइबर ठगों से पूरी राशि उस व्यक्ति को वापिस करा दी। इसी प्रकार, पटना की रहने वाली एक महिला डॉक्टर ने पोलैंड में रहने वाली अपनी बहन को 'ट्रांसफर वाइज ऐप' के जरिए 4.8 लाख रुपए की राशि भेजी थी। परंतु यह राशि उनकी बहिन के खाते में जमा ही नहीं हुई। तब उनकी बहन ने पोलैंड से हेल्पलाइन क्रमांक 1930 पर अपनी शिकायत दर्ज कराई।

साइबर पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए पूरी राशि साइबर ठगों के खातों में फ्रीज कराते हुए उस महिला डॉक्टर को वापिस करा दी। इस प्रकार की सफलता की लाखों कहानियां हैं। केवल आवश्यकता है कि साइबर ठगी के बारे में पता चलते ही तुरंत साइबर पुलिस में अपनी शिकायत दर्ज कराने की ताकि साइबर ठगों के विरुद्ध पुलिस द्वारा तुरंत कार्यवाही की जा सके। तुरंत कार्यवाही से साइबर ठगों से राशि की जब्ती सम्भव हो जाती है।

इंटरनेट और दूरसंचार सेवाएं पूर्णतया बंद करने पर अर्थव्यवस्था को गहरा नुकसान

असामाजिक तत्व ऐसे मौकों का फायदा उठाकर गलत सूचना का प्रसार करते हैं, जिससे देश के किसी एक कोने में हुआ छोटा विद्वेष मिनटों में पूरे देश में फैल जाता है। फिर फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब जैसे अनेकों सोशल मीडिया जैसे माध्यमों से खबर फैलते देर नहीं लगती।

वर्तमान में देश के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में अनुसूचित जनजाति में शामिल करने की मांग को लेकर घाटी बहुल मैइति और पहाड़ी बहुल कुकी जनजाति के बीच हिंसा भड़कने के बाद सरकार ने 3 मई को मणिपुर में इंटरनेट पर प्रतिबंध लगा दिया जो अनवरत है। मणिपुर उच्च न्यायालय के प्रतिबंध हटाने के निर्देश के बाद मामला उच्चतम न्यायालय में विचाराधीन है। मणिपुर में इंटरनेट पर प्रतिबंध पहली घटना नहीं है, बल्कि देश में आये दिन ऐसी घटनाएं होती रहती हैं जहां इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाना पड़ता है। इंटरनेट बैन से तत्काल हिंसा और अन्य अप्रिय घटनाओं से राहत तो मिल जाती है, लेकिन उसका बुरा प्रभाव सार्वजनिक सेवाओं और व्यवसाय पर पड़ता है। 2022 में प्रशासन की ओर से देश में 84 बार इंटरनेट सेवा को निरस्त करना पड़ा था। भारत में 2012 के बाद से कुल 500 से ज्यादा इंटरनेट बैन में से लगभग आधे अकेले जम्मू–कश्मीर में लगे हैं। अब तक का सबसे लंबा 213 दिनों का इंटरनेट प्रतिबंध भी जम्मू–कश्मीर में 5 अगस्त, 2019 से मार्च, 2020 तक लगा था।

2022 में राजस्थान के कई इलाकों में 16 बार और पश्चिम बंगाल के विभिन्न इलाकों में 7 बार इंटरनेट पर बैन लगाना पड़ा था। इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने संबंधी नियम 2017 में भारत सरकार के दूरसंचार विभाग द्वारा बनाया गया था, जिसे दूरसंचार सेवाओं के अस्थायी निलंबन (सार्वजनिक आपातकाल या सार्वजनिक सुरक्षा) नियम के तौर पर जाना जाता है। इस के तहत इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने का अधिकार केंद्रीय और राज्य स्तर पर भारत सरकार के गृह मंत्रालय के पास होता है, जिसके तहत सार्वजनिक आपातकाल' की स्थिति में इंटरनेट सेवाओं का अस्थायी निलंबन किया जा सकता है।

आजकल आये दिन शासन–प्रशासन द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में इंटरनेट पर प्रतिबंध लगाने के समाचार मिलते रहते हैं। इंटरनेट पर प्रतिबंध के प्रमुख कारणों में हिंसा, दंगे, धरना प्रदर्शन, परीक्षा का विरोध इत्यादि प्रमुख कारण हैं। वास्तव में इंटरनेट से संचालित सोशल मीडिया चैनलों के व्यापक प्रसार के कारण कोई भी सूचना मिनटों में पूरे देश और दुनिया में प्रसारित हो जाती है।



इंटरनेट फ्रीडम फाउंडेशन के आंकड़ों के अनुसार 2019 में इंटरनेट शटडाउन के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को लगभग 1.3 अरब डॉलर का नुकसान हुआ था। अंतरराष्ट्रीय आंकड़ों के अनुसार 2021 में पूरी दुनिया में 30,000 घंटों से ज्यादा इंटरनेट सेवाओं को रोका गया था, जिसके कारण 5.45 अरब डॉलर का नुकसान हुआ था।

भारत में 2021 में 1,150 घंटे से ज्यादा इंटरनेट अवरोधित रहा था, साथ ही हमारा देश इंटरनेट प्रतिबंध से हुए आय के नुकसान में तीसरे नंबर पर था इंटरनेट बैन के व्यवसाय पर असर का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2020 में दिल्ली में 24 घंटे के इंटरनेट शटडाउन में ई–कॉमर्स कंपनियों को 8 करोड़ से अधिक के राजस्व का नुकसान हुआ था।

आजकल दूरसंचार कंपनियां हों या बहुराष्ट्रीय कंपनियां, हर जगह फोन कॉल और एसएमएस का स्थान अब इंटरनेट आधारित कॉल और मैसेज ने ले लिया है। कोविड महामारी के बाद तो इ–कॉमर्स, इंटरनेट आधारित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ्टवेयर और एप इत्यादि का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ गया। इंटरनेट पर प्रतिबंध से आम लोगों को काफी परेशानी होती है। जैसे 2019 में कश्मीर में इंटरनेट शटडाउन के कारण हजारों छात्र ऑनलाइन परीक्षा देने से वंचित रह गए। वैसे ही 2021 में असम में इंटरनेट शटडाउन के कारण आम जनता को कोविड महामारी के दौरान स्वास्थ्य संबंधी जानकारी मिलने में तमाम परेशानियां हुईं।

इंटरनेट शटडाउन के नुकसान का संज्ञान लेते हुए संचार और आईटी मामलों के संसदीय पैनल ने हाल में अपने सुझाव पेश किए हैं जिनके तहत ट्राई को इंटरनेट कॉल और चुनिंदा मैसेजिंग एप पर प्रतिबंध लगाने का सुझाव दिया गया है, ताकि किसी भी क्षेत्र में इंटरनेट बैन के दुष्प्रभावों को कम किया जा सके। मूलतः इंटरनेट बैन का मुख्य उद्देश्य भ्रामक और नफरत फैलाने वाले संदेशों को फैलने से रोकना होता है, जिसे चुनिंदा साइट और एप पर प्रतिबंध लगाकर हासिल किया जा सकता है।

ट्राई ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि इंटरनेट और दूरसंचार सेवाएं पूर्णतया बंद करने पर अर्थव्यवस्था को गहरा नुकसान होता है।

नफरत फैलाने वाली वेबसाइट्स और एप की पहचान कर उनको स्थायी रूप से बैन करने का काम तेजी से चल रहा है।

चिह्नित स्रोतों पर बैन लगाने से आतंकियों और अखंडता विरोधी तत्वों के कुत्सित कृत्यों को रोकना संभव होगा। इससे आम सेवाएं और व्यवसाय भी अबाधित चलते रहेंगे, उनको कोई नुकसान नहीं होगा।

काशी भगवान शिव का सबसे प्यारा स्थान



काशी भगवान शिव के त्रिशूल पर विराजमान है और यह भगवान शिव का सबसे प्रिय स्थान है। काशी भारत का सबसे पुराना शहर और गंगा के तट पर स्थित है। यहां भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक स्थिति है, जिसे काशी विश्वनाथ के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि काशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचकर आत्मा शुद्ध हो जाती है और जीवन के रहस्यों के बारे में जानकारी मिलती है। इसलिए देश विदेश से 'लाखों लोग काशी पहुंचते हैं। इस मंदिर की आध्यात्मिक महिमा की जानकारी सभी धर्मग्रंथों में मिलती है। काशी में काशी विश्वनाथ के अलावा अन्नपूर्णा देवी मंदिर, गंगा घाट, भैरों मंदिर आदि के होने से इस जगह का आध्यात्मिक महत्व और बढ़ जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव और माता पार्वती विवाह के बाद से कैलाश पर्वत पर रहते थे। एक दिन माता पार्वती ने कहा कि जिस तरह सभी देवी–देवताओं के अपने घर हैं, उस तरह हमारा घर क्यों नहीं है। रावण ने तो लंका को ले लिया है इसलिए हमको दूसरी जगह के बारे में सोचना चाहिए। शिवजी को दिवोदास की नगरी काशी बहुत पसंद आई। निकुंभ नामक शिवगण ने भगवान शिव के लिए शांत जगह के लिए काशी नगरी को निर्मनुष्य कर दिया। ऐसा करने से राजा को बहुत दुख पहुंचा। राजा ने ब्रह्माजों की तपस्या की और उनको इस बारे में जानकारी देकर दुख दूर करने की प्रार्थना की। दिवोदास ने बोला कि देवता देवलोक में रहे पृथ्वी लोक तो मनुष्य के लिए है। ब्रह्मा के कहने पर भगवान शिव काशी को छोड़ कर मंदराचल पर्वत पर चले गए लेकिन काशी नगरी के लिए अपना मोह नहीं त्याग सके। तब भगवान विष्णु ने राजा को तपोवन में जाने का आदेश दिया। उसके बाद काशी महादेवजी का स्थाई निवास हो गया और यहां आकर भगवान शिव विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गए।

काशी को लेकर एक मान्यता भी है। एक बार भगवान शिव ने अपने भक्त को सपने में दर्शन दिए और कहा कि तुम जब सुबह गंगा में स्नान करोगे, तब तुमको दो शिवलिंगों के दर्शन होंगे। उन दोनों शिवलिंगों को तुम्हे जोड़कर स्थापित करना होगा तब दिव्य शिवलिंग की स्थापना होगी। तब से ही भगवान शिव माता पार्वतीजी के साथ यहां विराजमान हैं। काशी को सृष्टि की आदिस्थली भी कहा जाता है। एक मत के अनुसार भगवान विष्णु ने इसी स्थान पर सृष्टि की कामना के लिए काशी में तपस्या की थी। तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने भगवान विष्णु को दर्शन दिए और सृष्टि के निर्माण और संचालन के लिए कुछ उपाय भी बताए। जहां भगवान शिव प्रकट हुए वहां आज भी शिवलिंग की पूजा की जाती है



अन्नदाता किसान

मोर छत्तीसगढ़ के किसान।
तैंय आवच भारत के शान।।
एक हाथ म नागर धरे हच,
दूसर हाथ म धरे हच तुतारी।
बईला चलत हे आगु–आगु,
खेत ह आवय तोर महतारी।।
सबले हवच अन्नदाता महान।
मोर छत्तीसगढ़ के किसान।।
घाम–पियास म बूता करके,
गारके पछिना अन्न उपजाथच।
खूद भूखे पेट लाघन रहिके,
पेट भर जन–जन ल खवाथच।।
तोला कहिथें बिसनु भगवान।
मोर छत्तीसगढ़ के किसान।।
पीरा म कलहरत आँसू बोहात हे,
कोनों नईये तोर काँटा निकलईया।
अपन–अपन सब रोटी सेंकत हें,
खादी ह सुध नई लेवत हे भईया।।
देश के खातिर होगे कुर्बान।
मोर छत्तीसगढ़ के किसान।।

अशोक कुमार यादव
मुंगेली, छत्तीसगढ़

बारिश का कहर



> पूरे उत्तर भारत में आफत को भारी बारिश से स्थिति अत्यन्त ही भयावह और प्राणघातक हो गयी है। रविवार को बारिश ने जमकर कहर बरपाया।

> जम्मू–कश्मीर से लेकर दिल्ली, पंजाब और हिमाचल में भारी वर्षा से लोग बेहाल हो गये। सड़कें दरिया बन गयी हैं और नदी–नाले उफन गये हैं।

पूरे उत्तर भारत में आफत को भारी बारिश से स्थिति अत्यन्त ही भयावह और प्राणघातक हो गयी है। रविवार को बारिश ने जमकर कहर बरपाया। जम्मू–कश्मीर से लेकर दिल्ली, पंजाब और हिमाचल में भारी वर्षा से लोग बेहाल हो गये। सड़कें दरिया बन गयी हैं और नदी–नाले उफन गये हैं। दिल्ली से हिमाचल प्रदेश तक जल प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो गयी है वर्षा और भूस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में ३४ लोगों के मरने की खबर है। इसी प्रकार अन्य राज्यों में भी मृत्यु हुई है। रेल, सड़क और विमान सेवाओं पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कई ट्रेनें रद हो गयी हैं, जबकि कुछ ट्रेनों के मार्ग में परिवर्तन कर दिया गया है। दिल्ली में 41 वर्षोंपरान्त एक दिन में सर्वाधिक वर्षा दर्ज हुई है। जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तरा खण्ड, असम और पंजाब में भारी वर्षा से हालात काफी खराब हो गये हैं। पांच राज्यों में एक अन. मान के अनुसार 49 लोगों की वर्षाके कारण और उत्तर प्रदेश में 17 लोगों की बिजली गिरने के चलते मौतें हुई हैं। उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने मृतकों को चार–चार ला ख रुपये अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। स्वराष्ट्रमंत्री अमित शाह सक्रिय हो गये हैं। उन्होंने सभी राज्यों को हरसम्भव मदद देने का भरोसा भी दिया है। वर्षासे अमरनाथ यात्रा पर भी प्रभाव पड़ा है। मौसम विभाग ने दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखण्ड, राजस्थान, पंजाब और जम्मू–कश्मीर में भारी वर्षाकी चेतावनी दी है। इसलिए वर्षासे प्रभावित राज्योंकी सरकारों और

जनताको सतर्क रहनेकी जरूरत है। अनेक राज्योंमें शिक्षण संस्थानों को बंद कर दिया गया है और घरोंमें ही रहनेकी सलाह दी गयी है। उत्तर भारत के पहाड़ी और मैदानी क्षेत्रों में लोगों की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। विद्युत और पेयजल आर्पूतिपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। लोगों के सामने खाने–पीने और आवश्यक वस्तुओं का भी संकट उत्पन्न हो गया है इसलिए जिला प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वह आवश्यक बस्तुओं की आपूर्ति व्यवस्था बनाये रखने की दिशा में तत्काल कदम उठाये। भारी वर्षा के कारण लोग यात्रा पर जाने से भी बचें। जलग्रहण क्षेत्रोंके लिए जारी 'रेड अलर्ट' को देखते हुए काफी सतर्क रहनेकी जरूरत है।

प्रभावित क्षेत्रों में राहत शिविर लगाने की जरूरत है, जहां सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करायी जायं। पशुधनको सुरक्षित रखनेके लिए भी प्रयास किये जायं।

नदी की गुहार

जिंदगी क्या है
एक बहती नदी
जो सुख दुःख के
किनारों से
टकरा कर चलती.
चलती तो है
जब दुःखो का
पहाड़ गिरता
तो बादल से रिश्तें
मुँह मोड़ लेतेद्य
नदियाँ
सूखने लगती
पत्थर नग्न हो जाते
मानों किसी ने
गरीबी को उघाड़ दिया.
बादल को लगाई अर्जी
मौसम में आना जरूर
क्योंकि ये तुम्हारा
कर्तव्य जो है।
तुम बरसोगे तो ही
मै रहूँगी
और किनारों पर बसे
लोगों से कहती जाऊंगी.
बादल मेरे जीवन के
प्राण है
रिश्तें है
अर्पण है
समर्पण है
तुम्हारे बरसने से ही
लोग पूजते मुझेद्य

संजय वर्मा'दृष्टि'
125,बलिदानी भगतसिंग मार्ग
मनावर(धार)मप्र

सही अवसर की प्रतीक्षा करने की अपेक्षा वर्तमान अवसर का उपयोग करें

बेकार बैठने से बेहतर है कि आपके पास मानव संसाधन जैसी सभी क्षमताएं और भौतिक संसाधन जैसे संसाधन उपलब्ध है; उनका सदुपयोग करें। किसी लक्ष्य को प्राप्त करना व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है। किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने का कोई आदर्श मार्ग नहीं है।

उदाहरण के लिए, मंगलयान मिशन के दौरान इसरो ने इस मिशन के लिए अन्य देशों के पिछले प्रयासों की तुलना में कम कीमत पर और पहले ही प्रयास में परियोजना को पूरा कर लिया है। इस मिशन के लिए कम बजट आवंटन के बावजूद, इसरो वैज्ञानिकों ने इस मिशन के लिए पिछले रॉकेट के सभी मौजूदा हिस्सों का उपयोग किया है। इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि आपके पास उपलब्ध संसाधनों से शुरुआत करना बेहतर है।

अन्य अधिकारों के एक भाग के रूप में स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का बुनियादी मानवाधिकार है। उस स्वतंत्रता के साथ, प्रत्येक मनुष्य वह कर सकता है जो वह चाहता है, वह जो कुछ भी उसके पास है और जिस स्थिति में है, उसका उपयोग कर सकता है। तो, दूसरे शब्दों में, कोई भी अपने सभी संसाधनों के साथ अपनी क्षमता के तहत कुछ भी कर सकता है, जिस तरह की स्थिति में वह है। यह सच है कि व्यक्ति को पूरी क्षमता से, अपने पास मौजूद सभी संसाधनों के साथ और जिस स्थिति में वह है, वहीं से कार्य करना चाहिए। बेकार बैठने से बेहतर है कि आपके पास मानव संसाधन जैसी सभी क्षमताएं और भौतिक संसाधन जैसे संसाधन उपलब्ध है; उनका सदुपयोग करें। किसी लक्ष्य को प्राप्त करना व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है। किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने का कोई आदर्श मार्ग नहीं है। उदाहरण के लिए, मंगलयान मिशन के दौरान इसरो ने इस मिशन के लिए अन्य देशों के पिछले प्रयासों की तुलना में कम कीमत पर और पहले ही प्रयास में परियोजना को पूरा कर लिया है। इस मिशन के लिए कम बजट आवंटन के बावजूद, इसरो वैज्ञानिकों ने इस मिशन के लिए पिछले रॉकेट के सभी मौजूदा हिस्सों का उपयोग किया है। इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि आपके पास उपलब्ध संसाधनों से शुरुआत करना बेहतर है।

सही अवसर की प्रतीक्षा करने की अपेक्षा वर्तमान अवसर का उपयोग करना एक बुद्धिमान विकल्प है। सही अवसर जैसा कुछ नहीं है. यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि अब हम पूरी क्षमता और संसाधनों के साथ, सही दिशा में सही प्रयास के साथ कितनी अच्छी तरह काम करते हैं। जैसा कि एक प्रसिद्ध चीनी कहावत है, एक पेड़ लगाने का सही समय 20 साल पहले है, और अगला सबसे अच्छा समय अब है। इसका तात्पर्य यह है कि वर्तमान अवसर के उपयोग पर जोर दें। लेकिन कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि जल्दबाजी के बजाय सही अवसर उपयुक्त संसाधनों के साथ अधिक दक्षता लाता है। यह सच है लेकिन सही समय पर भी यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमें इसके प्रति किस तरह के प्रयास जारी रखने चाहिए। एक प्रसिद्ध कहावत है कि, महान लोग महान कार्य नहीं करते, वे सामान्य कार्य बहुत अधिक करते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम वर्तमान अवसर का भरपूर उपयोग करें।

कम यात्रा वाला रास्ता अपनाना अच्छा है। जब हम उस रास्ते पर चलते हैं, जिसे हर दूसरा व्यक्ति अपनाता है, तो हमें समान परिस्थितियों में समान परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन अगर हम कम यात्रा वाला रास्ता अपनाते हैं, तो हमें उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक बेहतर और आसान रास्ता मिल सकता है। लेकिन हम इसकी गारंटी नहीं दे सकते कि कम यात्रा वाले रास्ते में निश्चित रूप से कोई समाधान होगा। हम जिस बात की गारंटी दे सकते हैं वह यह है कि हम किस प्रकार का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब थॉमस अल्वा एडिसन ने पहली बार सफलतापूर्वक बल्ब का आविष्कार किया, तो वह सैकड़ों बार असफल हुए और उन्हें पता चला कि वह इतनी बार बल्ब का आविष्कार कैसे नहीं कर सकते। किसी को भी अपने पास मौजूद संसाधनों के साथ कम चुने गए रास्ते से डरना नहीं चाहिए। उदाहरण के लिए गांधी जी ने भारत को आजादी दिलाने के लिए सत्य अहिंसा और सत्याग्रह का मार्ग चुना। यह रास्ता अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने बहुत कम अपनाया है। इसलिए परिस्थितियों को समझना चाहिए और सोच–समझकर निर्णय लेना चाहिए।

किसी को आलोचना से हतोत्साहित नहीं होना चाहिए बल्कि किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए सही प्रयास और इच्छाशक्ति का प्रयोग करना चाहिए और रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए खुला रहना और लगातार सुधार करना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किस प्रकार की कड़ी मेहनत करते हैं। हमें सकारात्मक प्रतिक्रिया और टिप्पणियों के माध्यम से लगातार सुधार करना चाहिए जो हमारे सामूहिक ज्ञान और संसाधन और जिस स्थिति में हम हैं उसके आधार पर परिस्थितियों के लिए सबसे उपयुक्त है। भारत की आजादी के शुरुआती वर्षों के दौरान, जब भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के साथ लोकतंत्र का रास्ता चुना, तो कई राजनीतिक विश्लेषकों ने देखा कि भारत का लोकतंत्र का प्रयास जल्द ही विफल हो जाएगा। आलोचना के बावजूद हमारे नेता इच्छा शक्ति से आगे बढ़े। आज हमारे माननीय प्रधान मंत्री के अनुसार, "भारत लोकतंत्रों की जननी है।" इस प्रकार, अन्य चीजों के साथ–साथ हमारे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास भी मायने रखते हैं।

सहज तत्व, आत्मविश्वास, मानवीय कार्यों की मुख्य प्रेरक शक्ति है। यह हमारे मन और शरीर को शांत करेगा और आंतरिक शांति लाएगा। यह आत्मविश्वास तब बनता है जब हम चुनौती का सामना करने के लिए तैयार होते हैं। आत्मविश्वास के बिना एक बार बौद्धिक क्षमता अपनी पूर्ण दक्षता तक नहीं पहुंच पाती और हम काम बिगाड़ देंगे। पूर्ण फोकस और समन्वय के साथ, हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं, भले ही हमारे पास सीमित संसाधन हों और गंभीर स्थिति हो। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों द्वारा उरी हमले के बाद भारतीय सेना के एक गुप्त ऑपरेशन के दौरान हमारे सैन्यकर्मियों ने जोखिमों के बावजूद आत्मविश्वास और समन्वय के साथ संदिग्ध पाकिस्तानी आतंकवादियों पर सर्जिकल हमले में जो प्रयास किए, उससे ऑपरेशन सफल रहा। इस प्रकार, कम महत्वपूर्ण चीजों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय खुद पर विश्वास रखना महत्वपूर्ण है। इस बात पर व्यापक तर्क हैं कि किसी व्यक्ति को कुछ भी करने की अप्रतिबंधित स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए। ऐसा इसलिए है ताकि समाज के अन्य व्यक्तियों को वह करने की समान स्वतंत्रता मिल सके जो अन्य व्यक्ति करना चाहते हैं। यह समाज, राष्ट्र और मानवता की व्यापक भलाई के लिए भी महत्वपूर्ण है। राष्ट्र विरोधी तत्व, जो राष्ट्रीय सुरक्षा, संप्रभुता और अखंडता और अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को खतरे में डालते हैं, उन्हें प्रतिबंधित किया जाना है। ये समान प्रतिबंध हमारे भारतीय सं. विधान के विभिन्न अनुच्छेदों, जैसे अनुच्छेद 19, में भी निहित हैं।अनैतिक कार्यों जैसे नशीली दवाओं, हथियारों, सामानों की तस्करी या महिलाओं के लिए अपमानजनक टिप्पणी आदि को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। चूँकि इसका कूटनीतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र की ताकत पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। पारंपरिक रूप से गैरकानूनी कार्य जैसे कि समाज में अराजकता पैदा करना, जैसा कि कई घरेलू कानूनों, जैसे यूएपीए, आईपीसी की धारा 124 आदि द्वारा परिभाषित किया गया है या सरकार की स्थिरता को खतरा है, को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। विभिन्न कानूनों द्वारा लगाए गए अन्य प्रतिबंध हैं जैसे कि चार पूर्वोत्तर राज्यों के लिए स्वदेशी सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए इनर लाइन परमिट, और अन्य जो अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता को सीमित करते हैं।निष्कर्षत किसी व्यक्ति या संस्था की क्षमता, उपयोग के लिए उपलब्ध संसाधन और स्थिति का प्रकार अपने अंतिम उद्देश्यों को अधिक कुशलतापूर्वक और अनूठे तरीके से निर्देशित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, सांस्कृतिक कारकों, कानूनी कारकों, नैतिक कारकों आदि के आधार पर समाज में कोई क्या कर सकता है, इसके विभिन्न प्रकार के विवरण हैं। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अवसर से शुरुआत करना महत्वपूर्ण है, भले ही वह कम चुना गया रास्ता, सही प्रयासों और आत्मविश्वास के साथ।

डॉ सत्यवान सौरभ





करनाल में बाढ़ जैसे हालात

हरियाणा, करनाल। हथिनी कुंड बैराज से यमुना में साढ़े 3 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने से करनाल के इंद्री, घरौंडा और कुंजपुरा इलाके में बाढ़ के हालात बने हुए हैं। मंगलवार रात को गांव मूसेपुर और समसपुर के पास एक और बांध टूट गया, जिससे करीब 12 गांवों को खतरा पैदा हो गया है। बांध टूटने से गांव ब्याना तक यमुना का पानी पहुंच गया है। लोग अपने घरों के गेट के बाहर मिट्टी के कट्टे भर कर लगा रहे है ताकि पानी घरों के अंदर न आए। इस समय करीब 32 गांवों पानी में डूबे हुए हैं। सभी का शहरों से संपर्क कट गया है।

गढ़पुर टापू को तटबंध टूटे हुए आज 2 दिन हो चुके है और धीरे धीरे पानी के तेज बहाव से तटबंध और कटता जा रहा है। हांलाकि सेना व प्रशासनिक अधिकारी तटबंध को ठीक करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन पानी के तेज बहाव के कारण सफलता नहीं मिल रही।









राजस्थान में बाढ़ ने मचाई तबाही, सुरक्षित स्थान की तलाश में जुटे लोग।

समाजिक उत्तरदायित्व की भावना छात्रोपयोगी

ग्वालियर। छात्र समाज के और वर्गों के बारे में भी सोचे जो विकास की यात्रा में बिछड़ गए हैं। यह बात मध्य प्रदेश के एक दिवसीय दौरे पर आई राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अटल बिहारी वाजपेई भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान के चौथे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहीं। उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों सीखा है कि शून्य विश्व को भारत की देन है और कहा जाता है कि शून्य के शिलालेख का सबसे प्राचीन रूप सदियों पहले ग्वालियर के प्रसिद्ध किले में निर्मित चतुर्भुज मंदिर में देखा गया है। उन्होंने कहा कि मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों से यह अपेक्षा करती हूं कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना आपकी प्रगति के लिए उपयोगी सिद्ध होगी दूसरों की सहायता करने से अपनी क्षमताओं का भी विकास होता है।



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस की आधिकारिक यात्रा पर गत गुरुवार को दोपहर पहुंचे जहां पर फ्रांसीसी प्रध. ानमंत्री एलिजाबेथ बोर्न ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया दसवीं स्वागत के तहत उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया गया बता दें कि भारत और फ्रांस इस वर्ष रणनीतिक साझेदारी की 25 वीं वर्षगांठ मना रहा है।

<u>सिटी यूनिवर्सिटी का दूसरा दीक्षांत समारोह संपन्न</u>

छात्र देश और समाज का आधार स्तम्भ

- शिक्षा साहित्य और सामाजिक क्षेत्रों की प्रतिभाओं को मिली उपाधियां

बेंगलुरु। शहर के सरकारी कॉलेज में आयोजित बेंगलुरु सिटी यूनिवर्सिटी के दूसरे दीक्षांत समारोह में कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश में आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक और तकनीकी विकास के लिए शिक्षा में सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का समावेश सुनिश्चित करना शिक्षा विशेषज्ञों अन. ुदान एजेंसियों नीति निर्माताओं मानवतावादियो और समाज की जिम्मेदारी है। कार्यक्रम के दौरान समारोह अध्यक्ष श्री गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय सामाजिक परंपरा पर शोध को बढ़ावा देते हैं। सुलभ जीवन शैली के साथ–साथ

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली व्यक्तित्व निर्माण आध्यात्मिक ज्ञान के साथ–साथ व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का केंद्र थी जिसके कारण भारत को विश्व गुरु माना जाता है।

मानव जाति के लिए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले सामाजिक मुद्दों और स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान के विषय में विचार करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की बात हो रही है।

डिजिटल गतिविधियों को और अधिक व्यापक बनाने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए प्रौद्योगिकी को सरल एवं सुविधा संपूर्ण बनाना अनिवार्य है। स्मार्ट मेधावी और प्रतिभा संपन्न छात्र एक आदर्श समाज के आधार स्तंभ है। विद्यार्थियों का कार्य व्यवहार सोच समाज की विचारधारा संस्कृति एवं सभ्यता के अनुरूप होना चाहिए। नए विचारों प्रयोगों के लिए प्रेरक प्रभावशाली वातावरण तैयार करना उच्च शिक्षा, प्रतिभाशाली युवा पीढ़ी का दायित्व है।



मुलाकात

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह के आवास पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने की मुलाकात।

बृजलोक ट्रस्ट ने मयंक को लिया गोद

आगरा । ब्रजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (ट्रस्ट) ने अपने सेवा कार्यों में एक अध्याय और जोड़ा है। आर्थिक दृष्टि से बेहद कमजोर परिवार के एक बालक को गोद लिया है । जिसका संपूर्ण पढ़ाई–लिखाई, विद्यालय खर्च वर्ष 2023 – 24 तक ट्रस्ट उठाएगा । मयंक (गोद लिया छात्र) का प्रवेश श्री गोपीचंद कान्वेंट स्कूल (आगरा) में कराया गया है । ट्रस्ट अपने सीमित संसाधनों व सहयोगियों की सहायता से कुछ न कुछ सेवा कार्य करता ही रहता है । ट्रस्ट के अध्यक्ष – मुकेश कुमार ऋषि वर्मा ने बताया कि 'अगर सब कुछ ठीक रहा तो आगे ट्रस्ट कुछ और बच्चों को गोद लेगा और उनका भविष्य सुधरेगा । मयंक को अभी एक वर्ष के लिए गोद लिया है, साथ ही इसकी अवधि अगले वर्ष बडाई जाएगी ।'



बृजलोक ट्रस्ट द्वारा मयंक को पाठ्य सामग्री व यूनिफॉर्म भेंट की गई।

मयंक के बारे में अधिक जानने के लिए ट्रस्ट के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर देखा जा सकता है । आपको बता दें कि ट्रस्ट मुख्य रूप से साहित्य, कला, संस्कृति की सेवा में कार्यरत रहता है। उपर्युक्त विषयों से जुड़े कार्यक्रम ट्रस्ट द्वारा नियमित होते रहते हैं। ट्रस्ट के सेवा कार्यों से जुड़कर कोई भी महानुभाव अपनी सेवाएं दे सकता है । वहीं ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने मयंक के उज्ज्वल

खालिस्तान समर्थकों की गतिविधियों पर रोक लगाने की आवश्यकता

कनाडा में खालिस्तानियों के विरोध में भारतीय समुदाय के लोगों का सड़क पर उतरना उचित और समयानुकूल है। दरअसल भारत में वांछित खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की कनाडा में हत्या के बाद खालिस्तान समर्थक बौखलाये हुए हैं। इसी कड़ी में उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा में भारतविरोधी रैली निक. ालने का ऐलान किया था। भारत माता मन्दिर के बाहर भारतीय राजनयिकों के पोस्टर भी लगाये गये थे। इसी सन्दर्भ में गत शनिवार को कनाडा में भारतीय दूतावास के सामने खालिस्तान समर्थक और भारतीय समुदाय के लोग आमने–सामने आ गये। लगभग250 खालिस्तान समर्थक भारतीय दूतावास के बाहर झण्डे लहराकर नारे लगाये। इस प्रदर्शन का मुंहतोड़ जवाब देते हुए भारतीय समुदाय के लोगों ने तिरंगा फहराया और भारत माता की जय के साथ देशभक्ति के नारे लगाये। भारतीय समुदायके लोगों की नारेबाजी और एकता के आगे खालिस्तानियों के तेवर ढीले पड़ गये। प्रदर्शन के दौरान हिंसा भड़काने का प्रयास कर रहे दो खालिस्तान समर्थकों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इनमें से एक ने भारतीय समुदाय के लोगों पर और दूसरे ने पुलिस पर हमलेका प्रयास किया। बाद में दोनों को बिना किसी आरोप के रिहा कर दिया गया। कनाडा और ब्रिटेन की खालिस्तान समर्थकों की हिंसक गतिविधियों पर चुप्पी हैरान करने वाली है। शनिवार की घटना में भारतीय समुदाय के लोगों का बड़ी संख्या में जुटना और एकता देखकर खालिस्तान समर्थकों ने दुम दबा लिया वरन् बड़ी हिंसक घटना हो सकती थी जिसकी सारी जिम्मेदारी कनाडा सरकार की होती। खालिस्तान समर्थकों की रैली की घोषणा के बाद सरकार सख्ती की होती तो यह नौबत नहीं आती। भारत के साथ द्विपक्षीय रिश्तों में भविष्य को देखते हुए इन देशों को खालिस्तान समर्थकों की गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए कड़े कदम उठाने की जरूरत है।



हे नौजवानों उठो,जागो

हे नौजवानों उठो,जागो
अपने शौर्य को जानो तुम।
तुम ही देश के हो कर्णधार
अपनी प्रतिभा पहचानो तुम।।
तुमसे ही देश समृद्ध,गुलज़ार
है तुमसे ही देश का बेड़ापार।
तुम ही देश की ताकत हो
हो तुम ही देश का आधार।।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
हो तुम ही देश के पहरेदार।
कच्छ से कामरूप तक
हो तुम ही देश के चौकीदार।।
तेरे हिम्मत से दुनिया टिकी है
हो तुम ही देश के असल कर्मवीर।
तुमसे ही देश की नींव सुदृढ़ है,
निचोड़ सकते हो पत्थर से नीर।।
तुम ही कृषक उत्साही हो
तुम ही देश के सिपाही हो।
हो तुम ही देश के पालनहार
हो भाग्यविधाता,तारणहार।।

महेन्द्र साहू"खलारीवाला"
गुण्डरदेही बालोद छ ग



श्रावण मास के पहले सोमवार को भगवान शिव की नगरी काशी में उमड़ा शिव भक्तजनों का सैलाब।



सिकंदराबाद मैं आयोजित उज्जैनी महाकाली बोनालू उत्सव में पहुंचे श्रद्धालु



सावन महीने के पहले सोमवार को उज्जैन में है राजाधिराज भगवान महाकाल की सवारी निकली वह उज्जैन के राजा के रूप में बाबा महाकाल की अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए निकलते हैं इस अवसर पर स्थानीय कलेक्टर ने महाकाल का पूजन किया इसके बाद गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया ।

बालकहानी

ओमी को मिला सबक



कोंगनी नाला के तट पर एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था। पेड़ पर बंदरों का एक दल रहता था। एक अधेड़ बंदर दल का मुखिया था। अपने सब साथियों का वह बड़ा ध्यान रखता था। बंदर साथी भी उनका बड़ा आदर करते थे। कोई भी उनसे सलाह–मशविरा किये बगैर काम नहीं करते थे। पौ फटते ही सभी एक साथ भोजन की तलाश में निकल जाते थे। दिन भर सभी एक–दूसरे का बहुत ख्याल रखते थे। साँझ होते ही पेड़ पर लौट आते थे। आने वाले दिनों में भोजन की खोज में जाने संदर्भित चर्चा करते थे। इस तरह वान. रदल में प्रेम–एकता, भाईचारा व सहयोग का अनूठा संगम देखने को मिलता था।

बंदरों के समूह में एक छोटा सा बंदर था– ओमी। वह बहुत शरारती था। उसके माता–पिता हमेशा परेशान रहते थे। अन्य बंदरों को भी उसकी हरकतें बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसे हमेशा डाँट–डपट सुनने को मिलती थी। मुखिया बंदर हमेशा ओमी की शरारत पर उसे समझाता था। मुखिया सदैव अपने साथियों के सम क्ष ओमी की तरफदारी करते हुए कहा करते थे कि एक दिन वह अवश्य सुधर जाएगा। मुखिया की प्रेमपूर्ण तरफदारी से ओमी सबसे बच जाता; और जाने–अनजाने में हरकतें करता ही रहता था। कभी–कभार तो ऐसी हरकतें करता था कि उसके मम्मी–पापा का सर शर्म से झुक जाता था।

एक दिन की बात है। सावन का महीना था। आकाश काले–काले बादलों से ढका जा रहा था। बदन कँपकँपाती हवा की आहट आ रही थी। बिजलियाँ भी चमकने लगी थी। जोरदार बारिश की पूरी सम्भावना थी। सभी बंदर पेड़ पर बैठे हुए थे। मुखिया सबको चेता रहा था कि अब कोई कहीं नहीं जाएगा। सभी पत्तियों की झुरमुट से अपनी बचाव की व्यवस्था कर लें। तभी दल में से एक अनुपस्थित साथी आया। बोला– ' मुखिया जी , नाले के दूसरे तट पर जामुन का जो पेड़ है , वहाँ से गुजरते हुए मैं आ रहा था , तभी पेड़ पर बैठे पक्षियों के मुखिया नीलकंठ ने कहा कि आप सब बंदर; चाहे तो बचे पके हुए फलों को अपना भोजन बना सकते हैं; और कहा कि इस बात को अपने मुखिया को बता देना। ' साथी बंदर ने अपनी बात को विराम दी।

सभी बंदर अपने साथी की बात बड़े ध्यान से सुन रहे थे। सबको अच्छा लग रहा था। चिड़ियों का सुझाव भी पसंद आ रहा था। मुखिया ने सर हिलाते हुए कहा– ' ठीक है, अभी तो उस पेड़ के फलों को खाने की बारी उनकी ही है, पर वे जब अपने से कह रहे हैं तो हमें भी कोई ऐतराज नहीं है। क्यों साथियों...? '

हाँ...हाँ....मुखिया जी...ठीक है ना...।' सभी बंदरों ने हामी भरी। जाने के दिन व समय को मुखिया पर छोड़ दिया।

' तो ऐसा करते हैं...। मौसम को देखते हैं कि कब तक ऐसा ही रहेगा। मौसम खुलेगा फिर चलेंगे। इस समय कोई वहाँ नहीं जाएगा। तेज बारिश हो सकती है। ऐसे में खतरा मोल लेना ठीक नहीं है। '

' ठीक है मुखिया जी, आप सही कह रहे हैं।' कहते हुए सभी रात्रि विश्राम के लिए अपनी–अपनी जगह पर चले गये। साँझ को रात्रि अपनी आगोश में ले रही थी।

रात हो गयी। सब सो गये। पर एक नन्हा सा बंदर जाग रहा था; और वह था ओमी। सबकी पूरी बातें वह सुन और समझ चुका था। उन सबकी बातों ने ओमी की नींद उड़ा दी। अब ओमी का दिमाग चलने लगा कि क्यों न मैं अभी स्वयं चुपचाप अकेले जाकर पके–मीठे जामुन का मजा उड़ाऊँ। उसका मन गदगद–गदगद हो रहा था कि ये सभी तो घोड़े बेचकर सो रहे हैं। इन्हें तो कुछ पता ही नहीं चलेगा कि मैं जाऊँगा; और स्वादिष्ट फल खाकर इनके जागने से पहले आ भी जाऊँगा।ओमी मन ही मन हवाई पुल बना रहा था। सभी की गहरी नींद का फायदा उठाकर वह मध्यरात्रि को ही नाले की ओर चल पड़ा।

ओमी नाले के किनारे पहुँचा। रात की वजह से बहते पानी का स्तर उसे समझ नहीं आ रहा था। फिर भी छप–छप छलांग लगाते हुए पानी में चलने लगा। उसे बहते पानी का बिलकुल भय नहीं था। उसकी नजरों में सिर्फ पके–मीठे काले–काले जामुन ही दिखाई दे रहे थे। उसे अपना काम सिद्ध करने की शीघ्रता थी; सो उसने अपनी छलांग की लम्बाई व संख्या बढ़ा दी। अब वह बीच धार में पहुँच गया। ओमी के लिए सब कुछ तो बढ़िया सकारात्मक था, पर एक बात के लिए उसे बहुत अखर रहा था कि नाले के किनारे रहकर भी वह तैरना नहीं सीख पाया। अब तैरने की जरूरत पड़ने लगी। तभी अचानक पानी की धार तेज होने लगी; ओमी तनिक घबराया,फिर भी वह आगे ही बढ़ रहा था। अब धार इतनी तेज हो गयी कि वह बहने लगा। ओमी डर के मारे काँपने लगा। उसे असहाय सा महसूस होने लगा। मुँह में पानी भरने लगा। साँस फुलने लगी। पानी में बार–बार डूबने–निकलने से उसे साँस लेने में दिक्कत होने लगी। बेहोशी छाने लगी थी। तभी अचानक वह एक बहुत बड़े टीले से टकराया। टीले को कसकर पकड़ लिया। धीरे–धीरे करके उस पर चढ़ गया। उसका जी हाय लगा। पानी के तेज बहाव के कारण टीला भी जोर–जोर से हिल रहा था। ठंड से कम ; ओमी डर के मारे ज्यादा काँप रहा था। आज उसने मौत को करीब से देखा। जीवन और मृत्यु का अर्थ उसे समझ आ रहा था। वह.बेहद डरा हुआ था। बारिश वाली भीषण काली रात को उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। टीले को दोनों हाथों से कसकर पकड़ा ओमी सुबह होने का इंतजार करने लगा।

सुबह हुई। पेड़ पर सबने देखा कि ओमी गायब था। घंटे दो घंटे तक कहीं से लौट आने का इंतजार करने लगे। ओमी नहीं आया, तब सबको चिंता होने लगी। फिर मुखिया के कहने पर सभी ओमी की खोज में निकल पड़े। पूरे दल को चार टोलियों में बाँट दिया गया था। घंटे भर बाद ही एक टोली को ओमी दिखाई दिया। मुखिया ने सबको आवाज लगाई। सभी नाले के किनारे पर आए; देखा कि ओमी की दशा बहुत खराब थी। सबको बात समझ आ गई। फिर मुखिया के आदेश मुताबिक बंदरों ने बरगद की लम्बी जड़ों (जटाओं) का जुगाड़ किया। सभी टुकड़ों को जोड़कर एक डोर बनाया। एक बंदर पानी में कुछ दूरी पर जाकर डोर के एक छोर को ओमी को कुछ आवश्यक बातें बताते हुए टीले की ओर फेंका। फिर अपने साथियों के योजनानुसार ओमी ने डोर से अपनी कमर को कसकर बाँधा; और डोर को वह अच्छे से पकड़ा। फिर डोर के दूसरे छोर को बंदरों ने अपनी ओर खींचना शुरू किया। चूँकि पानी का बहुत ज्यादा था; सो बंदरों ने डोर को खींचने में पूरी जोर लगा दी। बड़ी मशक्कत के बाद उन्हें सफलता मिली।

तत्पश्चात ओमी को एक सूखी जगह पर ले जाकर पत्तों पर बिठाया। कुछ बंदर साथी उसके पूरे शरीर को पत्तों से पोछने लगे। ओमी की हालत कुछ ठीक हुई। सबने राहत की साँस ली। चूँकि ओमी से हमेशा सभी बंदर परेशान रहते थे; सो उन्हें आज मौका मिला था। सब गुस्साए हुए थे। आज सबने ओमी को खूब खरी–खोटी सुनाई। अंत में मुखिया सबको शांत करते हुए कहने लगा– ' बेटा ओमी, अब ऐसी गलती कभी मत करना। अपने से बड़ों की बातें सुनना, समझना व मानना सीखो। हमेशा हर काम सोच–समझकर किया करो। कभी भी किसी को बिना बताए कहीं मत जाना। जान जोखिम में डालकर कोई काम मत किया करो। लालच करना बहुत बुरी बात है; इसे गांठ बाँध लो। निज स्वार्थ से कोई काम सिद्ध नहीं होता। एक बात ध्यान से सुनो, प्राकृतिक चीजों– हवा, पानी, आग से जूझने की कोशिश कभी मत करना। प्रकृति के नियमानुसार जीवन जीना सीखो। आज की इस घटना से सबक लो।' सभी बंदर मुखिया की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे। तभी सबकी नजर ओमी पर गई ; देखा कि ओमी क्षमा याचना की मुद्रा में आँखों में आँसू लिये सर झुकाए बैठा था।

टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"
घोटिया–बालोद
(छत्तीसगढ़)

शिक्षा की उत्तम अनुशासित पद्धति गुरुकुल परंपरा

भारत महान ऋषियों की तपोभूमि है। मान्यता है कि चंदेल राजवंश की कहलूर रियासत की राजधानी बिला. सपुर का वैदिक नाम व्यासपुर वेदों के प्रथम व्याख्याता महर्षि वेद व्यास के नाम से संबंधित था। सतलुज नदी के तट पर व्यास ऋषि की तपोस्थली व्यास गुफा बिला. सपुर में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। संस्कृत के प्रकांड विद्वान एवं महाकाव्य महाभारत तथा अट्ठारह पुराणों एवं उपपुराणों के रचयिता के रूप में ख्यातिप्राप्त महर्षि वेद व्यास का जन्म इसी तपोस्थली पर हुआ था। विश्व का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ श्रीमद्भगवदगीता भी महाभारत का ही अंश है। गुरुसत्ता के प्रतिनिधि एवं भारतीय धर्म साहित्य संपदा के शिरोमणि महर्षि वेद व्यास महान लेखक एवं दार्शनिक थे। अलौकिक ज्ञानशक्ति से सम्पन्न महर्षि वेद व्यासने अपने शिष्यों पैल मुनिको ऋग्वेद, वैश्म्पायन को यजुर्वेद एवं सुमंतु को अथर्ववेद तथा जैमिनी को सामवेद में परम्परागत करके सनातन धर्म संस्कृति एवं वैदिक ज्ञानके प्रसारका दायित्व सौंपा था।

महर्षि वेद व्यास के उन चारों शिष्यों ने अपने आश्रमों को वेद शिक्षा का केन्द्र बनाया, तत्पश्चात सम्पूर्ण भारतवर्ष वैदिक ज्ञान से वेदमय हुआ था। महर्षि वेदव्यास के पुत्र शुकदेव भी वेदों के विद्वान ऋषि थे। सनातन धर्म की प्रतिष्ठा एवं वैदिक संपदा के प्रचार–प्रसार में वेदव्यास के अलावा आदि गुरु शंकराचार्य का भी महान योगदान रहा है। ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं पूर्व में पुरी के गोवर्धन मठ में ऋग्वेद, पश्चिम में द्वारिका के शारदा मठ में सामवेद एवं उत्तर में उत्तरा खंड के जोशीमठ में अथर्ववेद तथा दक्षिण में कर्नाटक के श्रृंगेरी पीठ में यजुर्वेदको स्थापित करके चारों मठों को वैदिक शिक्षा का केन्द्र बनाया था। आदि शंकराचार्य ने ही अपने विद्वान शिष्य को मठाधीश बनाने की परम्परा शुरू की थी। अतः गुरु–शिष्य परम्परा के निर्वहन में मठों की विशेष भूमिका रही है। भारत में अनादिकाल से गुरुओं के प्रति सम्मान एवं समर्पण र खनेवाले महान शिष्यों की गौरवशाली परम्परा रही है। ईश्वर के समतुल्य ज्ञानदाता गुरु द्वारा प्रदान शिक्षा एवं संस्कारों के आधारपर ही शिष्य अनुशासित एवं संस्कारवान बनते हैं।

आजादीके बाद देश के शिक्षा क्षेत्र में सुधारों के लिए कई नीतियां बनी। वर्तमानमें देश के कई सियासी रहन. ुमा शिक्षा क्रांति की दुहाई देकर अपनी सियासी जमीन मजबूत कर रहे हैं। इसके बावजूद शिक्षा क्षेत्र में वै. श्विकस्तर पर भारत पिछड़ चुका है। स्मरण रहे विश्व में शिक्षा की उत्तम एवं अनुशासित पद्धति गुरुकुलों का संचालन भारत भूमि पर हमारे आचार्यों ने सदियों पूर्व कर दिया था। उसी शिक्षा व्यवस्था के बल पर भारत को विश्वगुरु की पदवी हासिल हुई थी।

धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, शास्त्रार्थ, खगोल, ज्योतिष एवं अध्यात्म तथा ज्ञान–विज्ञान सहित कई विषयों में विश्व के सर्वश्रेष्ठ आचार्य भारतवर्षमें हुए थे। सांख्य दर्शनके प्रर्वतक कपिल मुनि एवं यंत्र सर्वस्व ग्रंथ के रचयिता महर्षि भारद्वाज तथा चंद्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनाकर भारत का इतिहास बदलनेवाले तक्षशिला विश्वविद्यालय के शिक्षक चाणक्य जैसे विद्वान आचार्यों का जन्म इसी भारत भूमि पर हुआ था। शैक्षिक ज्ञान से अपने शिष्यों को गुणवान बनानेवाले कई महान आचार्यों का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है। देवताओं के गुरु बृहस्पति तथा दैत्य गुरु महर्षि शुक्राचार्य दोनों अंगिरा ऋषि के शिष्य थे।

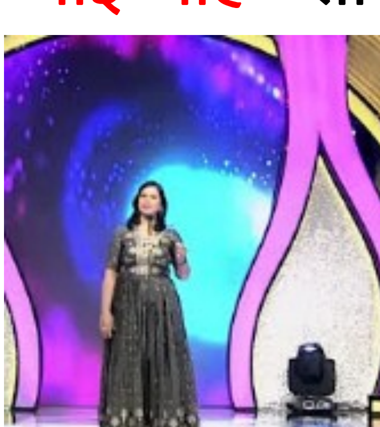
ऋषि उपमन्यु एवं आरुणि जैसे गुरुभक्त एवं धर्मशास्त्रों के महाज्ञाता शिष्यों ने महर्षि धौम्य से शिक्षा प्राप्त की थी। अपनी विद्वत्ता के बल पर गुरु परशुराम ने भीष्म, द्रोण एवं दानवीर कर्ण जैसे शिष्यों को शस्त्र विद्या में निपुण करके महान योद्धा बनाया था। अपने ल क्ष्य के प्रति संकल्पवान अर्जुन जैसा महान धनुर्धर शिष्य गुरु द्रोण के सान्निध्य से ही निकला था। ज्ञान वही जो व्यवहार में काम आये, इस प्रसंगका उल्लेख करनेवाले वैदिक आचार्य बहुश्रुति का प्राचीन भारत की शिक्षा में विशेष योगदान रहा था। भारतीय शिक्षा संस्कृति में गुरु–शिष्य परम्परा के विकास तथा शिष्यों में राष्ट्रवाद जगाने के लिए वैदिक आचार्य महर्षि शौनक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वैदिक शिक्षा के ध्वजवाहक शौनक ऋषि नैमिषारण्य के विशाल गुरुकुल के कुलपति थे। नैमिषारण्य में शिक्षा प्राप्त करनेवाले छात्रों की संख्या हजारों में थी।

आध्यात्मिकता के रंग में रंगी शौनक ऋषि की सिद्ध स्थली एवं विद्याध्ययन का प्राचीन केन्द्र नैमिषारण्य भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की मजबूत नींव रही है। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माणका कुशल संपादन करने वाले महर्षि शौनक को विश्व के प्रथम कुलपति होनेका गौरव प्राप्त था।

भावार्थ यह है कि जीवन में बेहतर भविष्य की कल्पना तथा असंभव लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गुरु रूपी महान विभूति के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। भारत में अनादिकाल से समाज को शिक्षित करने में आचार्यों तथा धर्म स्थापना के लिए आध्यात्मिक गुरुओं की विशेष भूमिका रही है, परन्तु विश्व की सर्वश्रेष्ठ शि क्षा व्यवस्था गुरुकुल पद्धति के संचालक महर्षि भारद्वाज, वाल्मीकि, बहुश्रुति, शौनक, अत्रि, संदीपनी, वशिष्ठ, मैत्रेय, अष्टावक्र, याज्ञवल्क्य एवं उद्दालक जैसे महाविद्वान आचार्य भारतीय शिक्षा पाठ्यक्रमों में गुमनाम क्यों हुए, यह मंथनका विषय है। वैदिक संस्कारोंसे परिपूर्ण प्राचीन शिक्षा व्यवस्था गुरुकुल एवं शिक्षा के स्तंभ आचार्य स्वाभिमान का प्रतीक हैं। राष्ट्रनिर्माण में सकारात्मक सोच से परिपूर्ण वैदिक शिक्षा शिक्षार्थी को हर परिस्थिति से सामना करके चुनौतियों से जूझने में सक्षम बनाती थी।

अतः अपनी गौरवशाली संस्कृति एवं वैदिक संस्कारों का अस्तित्व बचाने के लिए तथा विद्यार्थियों को अपने कर्तव्य एवं दायित्वबोध कराने के लिए मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में भारत का गौरव रही वैदिक शिक्षा का सम. ावेश जरूरी है। भारत की प्राचीन ज्ञान विरासत तथा गुरु–शिष्य परम्परा पर हर भारतवासी को गर्व होना चाहिए।

युवा कवयित्री सपना जैन ने "वाह भाई वाह" शो में किया काव्य पाठ





अहमदाबाद की युवा कवयित्री सपना जैन ने शेमारू चैनल के लोकप्रिय कार्यक्रम "वाह भाई वाह" के मंच पर अपनी ग़ज़लों से दर्शकों का मन मोह लिया। शैलेश लोढ़ा जी के संचालन में इस कार्यक्रम के माध्यम से देश की अनेको प्रतिभाओं को मंच पर आने का अवसर प्राप्त हुआ है।

इस सप्ताह 14 जुलाई 2023 के एपिसोड में शहर की युवा कवयित्री सपना जैन को भी यह अवसर प्राप्त हुआ। जीवन की सच्चाई से जुड़ी उनकी ग़ज़लों को दर्शकों ने बहुत सराहा । सपना जैन को विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से अनेको सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उनकी ग़ज़लों को शायरी के सबसे बड़े प्लेटफार्म 'रेख़्ता' में भी जगह मिली है। इसके अतिरिक्त उनकी कविताएं और ग़ज़लें विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। वह बताती हैं कि उनके प्रेरणा स्रोत मुनि श्री क्षमासागर जी रहे हैं। उनके पति राहुल जैन और परिवार ने उनकी इस साहित्यिक यात्रा में हमेशा उनकी हौसला अफ़ज़ाई की और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनकी इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर उनके पाठकों, मित्रों और परिजनों में खुशी की लहर छा गई।

अत्तुकल भगवती मंदिर

जहां पुरुष स्त्रीवेश में जाते हैं



केरल के कोल्लम जिले में एक ऐसा मंदिर है, जहां पुरुष जा तो सकते हैं, लेकिन सिर्फ महिलाओं के वेश में। इस मंदिर में प्रवेश के लिए पुरुषों को साड़ी ब्लाउज के अलावा नकली बाल और मेकअप भी करवाना पड़ता है। देश भर से पुरुष अपनी फरियाद लेकर इस मंदिर में पहुंचते हैं। मान्यता है कि जो पुरुष जितना महिलाओं जैसा दिखेगा, उसपर कृपा उतनी जल्दी होगी। इस मंदिर के बाहर पुरुषों को महिलाओं के वेश में बदलने वाले मेकअप आर्टिस्ट मिल जाते हैं। केरल में स्थित अत्तुकल भगवती मंदिर में सिर्फ महिलाओं को दर्शन की अनुमति है। अत्तुकल पोंगल इस मंदिर में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। इस दौरान यहां किसी धार्मिक आयोजन में एक साथ सबसे ज्यादा महिलाओं के इकट्ठा होने का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी बन चुका है। साल 2009 में इस मंदिर में एक साथ 25 लाख महिलाएं इकट्ठा हुई थीं। राजस्थान में भगवान ब्रह्मा का मंदिर है। यह दुनिया के गिने–चुने ब्रह्मा मंदिरों में शामिल है। बावजूद इसके यहां के खास हिस्से में शादीशुदा पुरुषों को जाने की मनाही है। इस हिस्से में सिर्फ महिलाएं जा सकती हैं। इसके पीछे एक पौराणिक कहानी है। दरअसल, ब्रह्मा भगवान देवी सरस्वती के साथ मिलकर एक यज्ञ करना चाहते थे। लेकिन ऐन मौके पर देवी को आने में देर हुई। यज्ञ में बैठने के लिए पत्नी का होना जरूरी था। ऐसे में ब्रह्मा ने देवी गायत्री से विवाह कर अपने यज्ञ को पूरा किया। ब्रह्मा और गायत्री के विवाह से क्रोधित सरस्वती ने शाप दिया कि कोई विवाहत पुरुष इस मंदिर में नहीं जा सकता। जो भी शादीशुदा पुरुष यहां जाने की कोशिश करेगा, उसके रिश्ते में खटास आएगी। इसके बाद से ही यहाँ शादीशुदा पुरुषों को जाने की मनाही हो गई।



सावन सुन्दरी

सतरंगी रंग म नहाके निकले,
अपसरा के आँखी चमके मोती।
दौना पान जईसे ममहावय देंह,
चंदा के अंजोर बगरे सबो कोती।।
हरियर–हरियर लुगरा पहिने,
झूलना, झूलत हें फूलवारी।
अंग म सोलह सिंगार करके,
नाचत आवत हें सावन सुन्दरी।।
कोनों गावैं मया–पिरीत के गीत,
कोनों करैं खूब हँसी–ठिठोली।
मन सुआ होगे बईहा रे संगी,
सुनके ऊँखर मैना कस बोली।।
माई लोगिन के सुघरई ल देख,
मूर्छा हो जाथे करिया बादर।
पहिन–ओढ़ के आवैंय जम्मों,
छत्तीसगढ़ माता के रूप ल धर।।
बिधुन होके खेलथें कई खेल,
कई हारथें, कई अऊवल आथें।
सुन्दरी, पाथे सम्मान अऊ ईनाम,
मुकूट पहिनके, रानी बन जाथें।।



अशोक कुमार यादव
मुंगेली, छत्तीसगढ़

एक ऐसा गांव जहां..



कोई पुरुष नहीं रहता अफ्रीकी देश केन्या में एक ऐसा गांव है, जहां कोई पुरुष नहीं रहता और न ही अंदर जा सकता है। बाहरी पुरुषों को भी इस गांव में कदम रखने की इजाजत नहीं है। चोरी– छिपे गांव में घुसने की कोशिश पर पुरुषों को गिरफ्तार किया जा सकता है। गांव में 50 परिवार हैं। सभी की मुखिया महिलाएं हैं। इस गांव में सिर्फ महिलाएं और लड़कियां हो नजर आती हैं।

इस गांव में भले ही पुरुषों को आने की इजाजत न हो पर यहां बेटे और बेटियां लगातार जन्म ले रहे हैं। अगर यहां की युवा महिलाओं को कोई पुरुष पसंद आता है या उन्हें अपना परिवार बढ़ाना होता है तो वे गांव से बाहर जाकर पुरुषों से संबंध बना सकती हैं। उन्हें शादी करने या अपने पति को यहां लाने की इजाजत नहीं है। कुछ महिलाओं ने गांव के बाहर शादी भी कर रखी है तो कुछ ऐसी भी हैं। जो अपना परिवार और गांव की आबादी बढ़ाने के लिए बिना है शादी किए बच्चों को जन्म देती हैं।

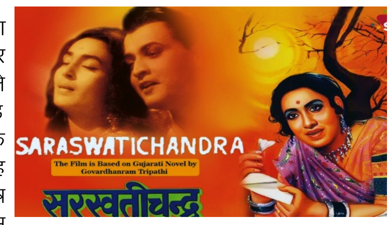
फिल्म बवाल का ट्रेलर जारी–



बॉलीवुड अभिनेता वरुण धवन और अभिनेत्री जानवी कपूर को आगामी फिल्म बवाल का दुबई में ट्रेलर रिलीज हुआ। साजिद नाडियावाला द्वारा निर्मित इस फिल्म का प्राइम वीडियो आगामी 21 जुलाई 2023 को रिलीज होने की संभावना है।

चंदन सा बदन चंचल चितवन, प्यार छुपा है खत में इतना जितने सागर में मोती फिल्म सरस्वतीचंद्र के यह गीत मुकेश और लता मंगेशकर की सुरीली आवाज के साथ संगीत जगत में अजर–अमर हो गये, थोड़ी–बहुत तारीफ अभिनेत्री नूतन को भी मिली, लेकिन सर्वाधिक उपस्थिति जिस कलाकार की थी ऐसे एक कलाकार को दुनिया ने भुला दिया वह है मनीष।

असीम कुमार को सही पहचान नहीं मिली



" कुछ लोग सरस्वतीचंद्र वाले मनीष को बंगाली फिल्मों में काम करने वाले असीम से अलग बोलते हैं। दरअसल उसमें कोई दो संदेह नहीं होना चाहिए कि वह दोनों एक ही कलाकार हैं कुछ लोग भोजपुरी फिल्म गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो में काम करने वाले असिन कुमार को यह मनीष समझते हैं। यह भी सच है कि नाम में गड़बड़ी होने के कारण इन दोनों कलाकारों को ढंग से पहचान नहीं मिल सकती सचिन कुमार और मनीष कुमार आज भी बंगाली फिल्मों से बड़ा नाम है जिनकी मृत्यु वर्ष 2002 में हो गई है।"

वास्तव में किसी की जगह कोई लेता नहीं लेकिन वह अपनी पहचान बनाकर चले जाते हैं, परंतु मनीष निकलने से पहले अपनी कोई पहचान नहीं छोड़ पाये। एक ऐसी सच्चाई यह भी है कि जानकार उन्हें जिस नाम से जानते हैं वह उनका वास्तविक नाम भी नहीं था। मात्र तीन फिल्मों के लिए उन्होंने मनीष का नाम धारण किया था, उसके बाद वह अपनी बंगाली फिल्मों में वापस चले गये और असीम नाम के साथ फिल्मों में काम करने लगे।

सरस्वती चंद्र फिल्म के निर्माता गोविंद तरैया अभिनेता दिलीप कुमार को कास्ट करना चाहते थे। दिलीप कुमार ने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई और न ही आगे कोई जवाब दिया। उसके बाद किरदार राजेंद्र कुमार के पास गया था लेकिन उन्होंने साफतौर पर इन्कार कर दिया। फिल्म सरस्वती चंद्र के लिए लीड एक्टर को छोड़ कर शेष का चयन हो चुका था। जब गोविन्द कोलकाता में थे तब उनकी पहचान नूतन के पिता.. और माता शोभना समर्थ से हुई। शोभना समर्थ ने ही गोविंद से कहा कि सरस्वती चंद्र की लीड ऐक्ट्रेस का किरदार पूरे भारत में उनकी बेटी के अलावा और कोई भी नहीं निभा सकता था। गोविन्द भी नूतन का नाम सुनकर खुश हो गये। इसके साथ ही शोभना यह भी चाहती थीं कि उनकी बेटी को यह नहीं पता चलना चाहिए कि उन्होंने अपनी बेटी का नाम आगे किया है। गोविंद अभिनेत्री निम्मी को साइन कर लिया था परंतु उसी से होती है लेकिन अली रजा की सगाई निम्मी से हुई। वह अपनी बीवी को काम करते हुए नहीं देखना चाहते थे। नूतन के नाम पर मुहर लगाने के बाद भी गोविंद चिंतित थे। शोभना समर्थ को जब गोविंद की चिंता का कारण पता चला तो उन्होंने तुरंत सेतू नामक नाटक देखने को कहा। सेतु नामक नाटक का 2000वा शो चल रहा था जिसमें अभिनेता असीम खलनायक की भूमिका में थे। असीम की शख्सियत सरस्वतीचंद्र के लीड एक्टर की तरह थी। शो समाप्त होने के बाद गोविंद ने असीम से मुलाकात की असीम भी उनके इस प्रस्ताव को इंकार नहीं कर सके।

सरस्वतीचंद्र में शीर्षक भूमिका हसीन उर्फ मनीष ने निभाया। उनकी अभिनय शैली की जितनी तारीफ करें उतनी ही कम है। फिल्म के लेखक और कैमरामैन नेशनल अवार्ड ले गये। कुछ नहीं आया। चित्रीकरण होने के बाद मनीष को दो अन्य फिल्मों विष्णु पुराण 1973 और प्रेम की गंगा 1971 मैं काम करने को मिला।

कुछ लोग उन्हें असीम कुमार भी समझते थे पर जानकारों के अनुसार ऐसा मानना है कि मनीष और असीम कुमार दोनों ही अलग–अलग कलाकार हुआ करते थे। अभिनेता अश्विनी कुमार हिंदी फिल्मों में छोटे–मोटे किरदार निभाते थे तो वही सरस्वतीचंद्र फिल्म में काम करने वाले मनीष नाम से बंगाली फिल्म करते थे। वसीम और मनीष का फिल्मी सफर बंगाली फिल्म नलान्चलेय महाप्रभु (1957) से शुरू होता है।

इस फिल्म के भक्ति में होने के कारण वसीम काफी लोकप्रिय हो गए थे। भक्ति प्रधान फिल्मों के साथ उनका नाम इस कदर जुड़ गया था कि वह बंगाली फिल्मों के महिपाल बन गए।



प्रयागराज में श्रावण मास के पहले सोमवार को शिव भक्तों में पवित्र संगम स्थल पर आस्था की लगाई डुबकी।



महानगर गोरखपुर के शिवालयों में शिव भक्तों ने किया भगवान शिव का जलाभिषेक एवं दुग्धाभिषेक।



सरिता के छंद

(1)
सरिता बहे जगत के हित में,सबको नीर दे।
खेत सींचती,मंगल करती,सबकी पीर ले।।
सरिता अपना धर्म निभाती,बहती ही रहे।
कोई कितना कर दे मैला,सहती ही रहे।।

(2)
हर सरिता गंगा सी पावन,इतना जान लो।
हर सरिता पूजित,मनभावन,यह तो मान लो।।
सरिता है भगवान की रचना,जिसमें ताप है।
कितना उपकृत करती हमको,कभी न माप है।

(3)
सरिता युग–युग से धरती पर,जीवनदायिनी।
शुभ–मंगल के गीत सुनाती,पुण्यप्रदायिनी।।
गंगा–यमुना सी हर सरिता,प्रमुदित भावना।
रोग,शोक,संताप हरे जो,पुलकित कामना।।

(4)
जल पूजित,सरिता भी पूजित,पूरण आस है।
पापहारिणी,शापनाशिनी,सुख का वास है।।
हर मौसम,हर विपदा में भी,जग है मानता।
तेरा जल मानो अमरत है,पूजा ठानता।।

(5)
पर्वत से तू बहकर आती,हित को साधती।
दुनिया सारी,तुझको माने,आशा बाँधती।।
सरिता ने नित धर्म सँवारा,जय–जय देविका।
यहाँ आज जल के पूजक सब,सेवी–सेविका।।

–प्रो(डॉ)शरद नारायण खरे

श्री बागेश्वर धाम की भक्ति का संदेश

जा रे भक्त तू भी दर्शन को जल्द जा
खुला है श्री बागेश्वर धाम मंदिर का द्वार
तेरे जाने से तेरी अर्जी का
हल अवश्य होगा
पूर्ण विश्वास के साथ
समाधन भी जल्द होगा।
घर से मंदिर तक जाने की
नित्य भक्त की भक्ति को देखकर
दरबार मे बैठे भक्तों के संग
तुम्हें भजन सुनाते देखना चाहता हूँ
और ये भी समझना चाहता हूँ कि
श्री बालाजी के भक्तों की तरह
तुम भी श्री बालाजी के दर्शन पाओगे
अपने अपनों से भक्ति भाव सीखते
तुम भी जाकर
सनातन धर्म की पताका फहराओ
इसलिए तुम्हे आशीर्वाद प्राप्त करने
धाम भेजने की प्रेरणा दे रहा हूँ
कम से कम
तुम हिंदू राष्ट्र बनाने का
संकल्प धारण कर
श्री बालाजी के दरबार में
जाकर खुश रहो।



संजय वर्मा "दृष्टि "(सनातनी)
मनावर जिला धार मप्र

प्रिय पाठकों,

इस अंक में प्रकाशित सभी अग्रलेख, कथा–लघु कथा, कविता, व्यंग्य, विचार विमर्श लेखकों एवं विचारकों की अपनी कल्पना प्रसूति हैं। त्रुटियां मानवीय स्वभाव का अंग हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट करना एक जागरूक पाठक की विशेषता होती है।

अतः आप सभी सुधी विज्ञजनों, से ऐसी अपेक्षा की जाती है कि आप अपने पत्रों के माध्यम से इस अंक में प्रकाशित त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट भी समय–समय पर कराते रहें ताकि उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

विवाद की स्थिति में न्यायालय, गोरखपुर का निर्णय अंतिम व मान्य होगा।

–व्यवस्थापक

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकजधर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस, निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित। सम्पादक–पंकज धर द्विवेदी सम्पर्क सूत्र– e-mail- ghoonghatkibagawat37@gmail.com